आर एन आई नम्बर UPHIN/2017/74520

साहित्य सरोज

वर्ष-3 अंक -3 गहमर त्रैमासिक जुलाई 2020 से सितम्बर 2020 मुल्य 30

बेवसाइटः https://sarojsahitya.page ईमेल sarojsahitya55@gmail.com

साहित्य सरोज

एक सम्पूर्ण साहित्यिक पत्रिका

वर्ष-3 अंक -3

माह जुलाई 2020 से सितम्बर 2020

संस्थापिका -: स्व०श्रीमती सरोज सिंह

प्रधान संपादक -: श्रीमती कान्ति शुक्ला ''उर्मि'' भोपाल

प्रकाशक -: अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

संपादक -: डा० कमलेश द्विवेदी, दशरपुरवा कानपुर

अध्यक्ष तकनीकी विभाग -: श्री राजीव यादव

प्रधान कार्यालय -: मेन रोड,गहमर, गाजीपुर

प्रधान कार्यालय व्यवस्थापक :-

प्रशांत कुमार सिंह

ईमेल sarojsahitya55@gmail.com

9451647845

बेवसाइट-: https://sarojsahitya.page

मोबाइल अप्लीकेशन प्ले स्टोर- साहित्य सरोज

प्रति अंक -30रूपये मात्र,

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रधुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, तहसील जमानियाँ, जनपद गाजीपुर, उ0प्र0 पिन 232327 द्वारा पंकज प्रकाशन आमघाट,गाजीपुर से मुद्रित एवं अखण्ड प्रताप सिंह द्वारा प्रकाशित।

पत्रिका में छपे लेख,कहानीयाँ एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा।

तकनीकि पक्ष-: कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर

चित्र -गूगल ईमेज द्वारा।

हमें करें फालो टियूटर पर और सस्क्राइव करें हमारे यूटियूब चैनल साहित्य सरोज को अखंड गहमरी''

अनुक्रमाणिका

नवरात्रि पर विशेष प्रस्तुति
साहित्य सरोज संपादक मंडल -2

नवरात्रि क्या है?
साहित्य सरोज संपादक मंडल -6

गोलू	जमुना कृष्ण राज	7
असली पूजन	रजना शर्मा	8

नवरात्रि का आधुनिक पक्ष
डा नीना छिब्बर 10

माँ शारदे को नमन	स्वर्ण ज्योति	11
व्रत में खाईये	मीना अरोड़ा	12

नवरात्रि का वैज्ञानिक पक्ष
लीला पलानी 15

फलहारी डोसा	नीता चतुर्वेदी	16
माता रानी	डा0 प्रतिभा कुमारी	16
छोले वाली माँ	नीता चतुर्वेदी	17
कोमल हैं	सुषमा दुबे	18
नारी जीवन	प्रो डा शरद खरे	19
सबको हसाती	इंदु उपाध्याय	19
मखाने की खीर	अलका पांडे	20
फलाहारी कोफ्तें	कुमुद दुबे	20
या देवी	शिल्पा अरोड़ा	21
माँ दुर्गा की महिमा	शोभा रानी	21
माता मंशा देवी	किरण बाला	22
कामाख्या धाम	अखंड गहमरी	23
ढ़ोग बंद करो	अलका	27
नवरात्रि.	स्वर्ण ज्योति	27
नवदुर्गा	अलका	28
हरसिद्धि	नंदिनी	29
समाज के बदलाव	कान्ति शुक्ला	30

गंगा में गीता

अधिमास के कारण इस बार एक महीने देरी से शारदीय नवरात्रि शुरू हो रहा है। पंचांग की माने तो, अश्विन माह के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि से शारदीय नवरात्रि शुरू होती है। इस बार ये तिथि 17 अक्टूबर को है। वर्ष 2020 में सितंबर से पितृपक्ष शुरू हुआ जो 17 सितंबर को समाप्त हो गया. 18 सिंतबंर से अधिमास लग गया जिसे कही कही मलेमास भी का जाता है. यह मास 28 दिन दिन का है। इस महीने में कोई त्योहार नहीं मनाया ना तो कोई भी शुभ कार्य भी नहीं किया जाता है। वर्ष 2020 में 17 अक्टूबर से शारदीय नवरात्र शुरू होगा।

विजय दशमी 25 अक्टूबर को मनाई जाएगी. इस बार नौ दिनों में ही दस दिनों के पर्व पूरा हो जाएगा. इसका कारण तिथियों का उतार चढ़ाव है. 24 अक्तूबर को सुबह 6 बजकर 58 मिनट तक अष्टमी है और उसके बाद नवमी लग जाएगी. दो तिथियां एक ही दिन पड़ रही है। अष्टमी और नवमी की पूजा एक ही दिन होगी. जबकि नवमी के दिन सुबह 7 बजकर 41 मिनट के बाद दशमी तिथि लग जाएगी. इस कारण दशहरा पर्व और अपराजिता पूजन एक ही दिन आयोजित होंगे. कुल मिलाकर 17 से 25 अक्टूबर के बीच नौ दिनों में दस पर्व संपन्न हो रहे हैं।

माँ के आगमन की सवारी

इस बार शारदीय नवरात्र का आरंभ शनिवार के दिन हो रहा है. ऐसे में देवीभाग्वत पुराण के कहे श्लोक के अनुसार माता का वाहन अश्व होगा. अश्व पर माता का आगमन छत्र भंग, पड़ोसी देशों से युद्ध, आंधी तूफान लाने वाला होता है. ऐसे में आने वाले साल में कुछ राज्यों में सत्ता में उथल-पुथल हो सकता है. सरकार को किसी बात से जन विरोध का भी सामना करना पड़ सकता है. कृषि के मामले में आने वाल साल सामान्य रहेगा. देश के कई भागों

नवरात्रि के नौ दिन नौ तिथियाँ

17 अक्टूबर- शनिवार	प्रथम दिन
18 अक्टूबर- रविवार	द्वितीय दिन
19 अक्टूबर- सोमवार	तृतीय दिन
20 अक्टूबर- मंगलवार	चतुर्थी
21 अक्टूबर- बुद्धवार	पंचमी
22 अक्टूबर- गुरूवार	षष्ठी
23 अक्टूबर- शुक्रवार	सप्तमी
24 अक्टूबर- शनिवार	अष्टमी
25अक्टूबर - रविवार	नवमी

नवरात्रि के नौ दिन नौ देवी

17 अक्टूबर- माँ शैलपुत्री पूजा
18 अक्टूबर- माँ ब्रह्मचारिणी पूजा
19 अक्टूबर- माँ चंद्रघंटा पूजा
20 अक्टूबर- माँ कुष्मांडा पूजा
21 अक्टूबर- माँ स्कंदमाता पूजा
22 अक्टूबर- माँ कात्यायनी पूजा
23 अक्टूबर- माँ कालरात्रि पूजा
24 अक्टूबर- माँ महागौरी दुर्गा पूजा
25 अक्टूबर- माँ सिद्धिदात्री पूजा

देवी के नौ नामो का अर्थ

'शैलपुत्री - अर्थ- पहाड़ों की पुत्री होता है।
ब्रह्मचारिणी - अर्थ- ब्रह्मचारीणी।
चंद्रघंटा - अर्थ- चाँद की तरह चमकने वाली।
कूष्माण्डा - अर्थ- पूरा जगत उनके पैर में है।
स्कंदमाता - अर्थ- कार्तिक स्वामी की माता।
कात्यायनी -अर्थ- कात्यायन आश्रम में जन्मि।
कालरात्रि - अर्थ- काल का नाश करने वली।
महागौरी -अर्थ- सफेद रंग वाली मां।
सिद्धिदात्री - इसका अर्थ- सर्व सिद्धि देने वाली।

देवी के नौ मुख्य स्थान

(1) माता वैष्णो देवी	जम्मू कटरा
(2) माता चामुण्डा देवी	हिमाचल प्रदेश
(3) माँ वज्रेश्वरी	कांगड़ा वाली
(4) माँ ज्वालामुखी देवी	हिमाचल प्रदेश
(5) माँ चिंतापुरनी	उना
(6) माँ नयना देवी	बिलासपुर
(7) माँ मनसा देवी	पंचकुला
(8) माँ कालिका देवी	कालका
(9) माँ शाकम्भरी देवी	सहारनपुर

नवरात्रि के नौ दिन नौ रंग

नवरात्रि के हर दिन का एक रंग है. मान्यता है कि इन रंगों का उपयोग करने से सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

प्रथम - पीला
द्वितीया- हरा
तृतीया- भूरा
चतुर्थी- नारंगी
पंचमी- सफेद
षष्टी- लाल
सप्तमी- नीला
अष्टमी- गुलाबी
नवमी- बैंगनी

नवरात्रि पूजा विधि

ब्राहम्ण मूहर्त में यानि सुबह सूर्योदय के पूर्व स्नान इत्यादि करके पूजन थाल सजाएं और माँ दुर्गा की प्रतिमा के नीचे लाल कपड़ा बिछा कर स्थापित करें।

मिट्टी के क्लश में गंगा या शुद्व जल भरें उसके मुख पर आम की पत्तियां लगाएं और ऊपर नारियल रखें. कलश को लाल कपड़े से लपेटे और लाल धागे के माध्यम से उसे बांध। और उसे चारो और साफ मिट्टी रख कर स्थापित करें। मिट्टी में जौ के बीज बोयें और नवमी तक प्रति दिन पानी का छिड़काव करें।

फूल, कपूर, अगरबत्ती, ज्योत के साथ दुर्गासप्तशदि पुस्तक में दिये हुए विधि से नौ दिन पूजन करें।

नवमी को दुर्गा पूजा के बाद नौ कन्याओं का पूजन करें और उन्हें तरह-तरह के व्यंजनों पूड़ी, चना, हलवा का भोग लगाएं। अंतिम दुर्गा के पूजा के बाद घट विसर्जन करें।

नवरात्रि के लिए पूजा सामग्री

मां दुर्गा की प्रतिमा अथवा चित्र, लाल चुनरी, आम की पत्तियां, चावल, दुर्गा सप्तशती की किताब, लाल कलावा, गंगा जल, चंदन, नारियल, कपूर, जौ के बीच, मिट्टी का बर्तन, गुलाल, सुपारी, पान के पत्ते, लौंग, इलायची इत्यादि पूजा थाली में जरूर रखें।

नवरात्रि का पहला दिन

नवरात्रि के पहले दिन माता शैलपुत्री की पूजा की जाती है. मां पार्वती माता शैलपुत्री का ही रूप हैं और हिमालय राज की पुत्री हैं. माता नंदी की सवारी करती हैं. इनके दाहिने हाथ में त्रिशूल और बायें हाथ में कमल का फूल है. नवरात्रि के पहले दिन लाल रंग का महत्व होता है. यह रंग साहस, शक्ति और कर्म का प्रतीक है. नवरात्रि के पहले दिन घटस्थापना पूजा का भी विधान है। प्रतिपदा को मंत्र- **"ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं शैलपुत्र्यै नमः"** की माला दुर्गा जी के चित्र के सामने यशाशक्ति जप कर घी से हवन करें।

नवरात्रि का दूसरा दिन

नवरात्रि का दूसरा दिन माता ब्रह्मचारिणी को समर्पित होता है. माता ब्रह्मचारिणी मां दुर्गा का दूसरा रूप हैं. ऐसा कहा जाता है कि जब माता पार्वती अविवाहित थीं तब उनको ब्रह्मचारिणी के रूप में जाना जाता था. यदि माँ के इस रूप का वर्णन करें तो वे श्वेत वस्त्र धारण किए हुए हैं और उनके एक हाथ में कमण्डल और दूसरे हाथ में जपमाला है. देवी का स्वरूप अत्यंत तेज और ज्योतिर्मय है. जो भक्त माता के इस रूप की आराधना करते हैं उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है. इस दिन का विशेष रंग नीला है जो शांति और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है.

द्वितिया को मंत्र- **"ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं ब्रह्मचारिण्यै नमः"**, की माला दुर्गा जी के चित्र के सामने यशाशक्ति जप कर घृत से हवन करें।

नवरात्रि का तीसरा दिन

नवरात्र के तीसरे दिन माता चंद्रघण्टा की पूजा की जाती है. पौराणिक कथा के अनुसार ऐसा माना जाता है कि मां पार्वती और भगवान शिव के विवाह के दौरान उनका यह नाम पड़ा था. शिव के माथे पर आधा चंद्रमा इस बात का साक्षी है. नवरात्र के तीसरे दिन पीले रंग का महत्व होता है. यह रंग साहस का प्रतीक माना जाता है।

तृतीया को मंत्र- **"ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चन्द्रघंटायै नमः"** की 1 माला जप कर घृत से हवन करें।

नवरात्रि के चौथे दिन

नवरात्रि के चौथे दिन माता कुष्माडा की आराधना होती है. शास्त्रों में मां के रूप का वर्णन करते हुए यह बताया गया है कि माता कुष्माण्डा शेर की सवारी करती हैं और उनकी आठ भुजाएं हैं. पृथ्वी पर होने वाली हरियाली मां के इसी रूप के कारण हैं. इसलिए इस दिन हरे रंग का महत्व होता है।

चतुर्थी को मंत्र- **"ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै नमः"** की 1 माला जप कर घृत से हवन करें।

नवरात्रि का पांचवां दिन

नवरात्र के पांचवें दिन मां स्कंदमाता का पूजा होता है. पौराणिक शास्त्रों के अनुसार भगवान कार्तिकेय का एक नाम स्कंद भी है. स्कंद की माता होने के कारण मां का यह नाम पड़ा है. उनकी चार भुजाएं हैं. माता अपने पुत्र को लेकर शेर की सवारी करती है. इस दिन

धूसर रंग का महत्व होता है.
पांचवें दिन मंत्र- "ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं स्कंदमातायै नमः" की 1 माला जप कर घृत से हवन करें।

नवरात्रि के छठवें दिन

मां कात्यायिनी दुर्गा जी का उग्र रूप है और नवरात्रि के छठे दिन मां के इस रूप को पूजा जाता है. मां कात्यायिनी साहस का प्रतीक हैं. वे शेर पर सवार होती हैं और उनकी चार भुजाएं हैं. इस दिन केसरिया रंग का महत्व होता है.
छठे दिन मंत्र- **"ऊँ क्रीं कात्यायनी क्रीं नमः"** की 1 माला जप कर घृत से हवन करें।

नवरात्रि के सातवें दिन

नवरात्र के सातवें दिन मां के उग्र रूप मां कालरात्रि की आराधना होती है. पौराणिक कथा के अनुसार ऐसा कहा जाता है कि जब मां पार्वती ने शुंभ-निशुंभ नामक दो राक्षसों का वध किया था तब उनका रंग काला हो गया था. हालांकि इस दिन सफेद रंग का महत्व होता है.
सातवें दिन मंत्र- **"ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं कालरात्र्यै नमः"** की 1 माला जप कर घृत से हवन करें।

नवरात्रि के आठवें दिन

महागौरी की पूजा नवरात्रि के आठवें दिन होती है. माता का यह रूप शांति और ज्ञान की देवी का प्रतीक है. इस दिन गुलाबी रंग का महत्व होता है जो जीवन में सकारात्मकता का प्रतीक होता है.

आठवें दिन मंत्र- **"ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं महागौर्ये नमः"** की 1 माला जप कर घृत या खीर से हवन करें।

नवरात्रि का अंतिम दिन

नवरात्रि के आखिरी दिन मां सिद्धिदात्री की आराधना होती है. ऐसा कहा जाता है कि जो कोई मां के इस रूप की आराधना सच्चे मन से करता है उसे हर प्रकार की सिद्धि प्राप्त होती है. मां सिद्धिदात्री कमल के फूल पर विराजमान हैं और उनकी चार भुजाएं हैं.
नौवें दिन मंत्र- **"ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं सिद्धिदात्र्यै नमः"** की 1 माला जप कर जौ, तिल और घृत से हवन करें।

घटस्थापना का मुहूर्त

प्रतिपदा तिथि 17 अक्टूबर की रात 1 बजे से प्रारंभ होगी. वहीं, प्रतिपदा तिथि 17 अक्टूबर की रात 09 बजकर 08 मिनट पर समाप्त हो जाएगी. इसके बाद आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि, यानी 17 अक्टूबर को घट स्थापना मुहूर्त का समय सुबह 06 बजकर 27 मिनट से 10 बजकर 13 मिनट तक का है. अभिजित मुहूर्त प्रातरूकाल 11 बजकर 44 मिनट से 12 बजकर 29 मिनट तक रहेगा.

नवरात्रि क्या है?

नवरात्रि हिंदुओं का एक प्रमुख पर्व है। नवरात्रि शब्द एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है "नौ रातें"। इन नौ रातों और दस दिनों के दौरान, शक्ति देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है। दसवाँ दिन दशहरा के नाम से प्रसिद्ध है। नवरात्रि वर्ष में चार बार आता है। पौष, चौत्र, आषाढ,अश्विन मास में प्रतिपदा से नवमी तक मनाया जाता है। नवरात्रि के नौ रातों में तीन देवियों - महालक्ष्मी, महासरस्वती या सरस्वती और महाकाली के नौ स्वरुपों की पूजा होती है । नवरात्रि एक महत्वपूर्ण प्रमुख त्योहार है जिसे पूरे भारत में महान उत्साह के साथ मनाया जाता है।

नवरात्रि भारत के विभिन्न भागों में अलग ढंग से मनायी जाती है। गुजरात में इस त्योहार को बड़े पैमाने से मनाया जाता है। गुजरात में नवरात्रि समारोह डांडिया और गरबा के रूप में जान पड़ता है। यह पूरी रात भर चलता है। डांडिया का अनुभव बड़ा ही असाधारण है। देवी के सम्मान में भक्ति प्रदर्शन के रूप में गरबा, आरती से पहले किया जाता है और डांडिया समारोह उसके बाद। पश्चिम बंगाल के राज्य में बंगालियों के मुख्य त्यौहारो में दुर्गा पूजा बंगाली कैलेंडर में, सबसे अलंकृत रूप में उभरा है। इस अदभुत उत्सव का जश्न नीचे दक्षिण, मैसूर के राजसी क्वार्टर को पूरे महीने प्रकाशित करके मनाया जाता है।

कहा जाता है कि लंका-युद्ध में ब्रह्माजी ने श्रीराम से रावण वध के लिए चंडी देवी का पूजन कर देवी को प्रसन्न करने को कहा और बताए अनुसार चंडी पूजन और हवन हेतु दुर्लभ एक सौ आठ नीलकमल की व्यवस्था की गई। वहीं दूसरी ओर रावण ने भी अमरता के लोभ में विजय कामना से चंडी पाठ प्रारंभ किया। यह बात इंद्र देव ने पवन देव के माध्यम से श्रीराम के पास पहुँचाई और परामर्श दिया कि चंडी पाठ यथासभंव पूर्ण होने दिया जाए। इधर हवन सामग्री में पूजा स्थल से एक नीलकमल रावण की मायावी शक्ति से गायब हो गया और राम का संकल्प टूटता-सा नजर आने लगा। भय इस बात का था कि देवी माँ रुष्ट न हो जाएँ। दुर्लभ नीलकमल की व्यवस्था तत्काल असंभव थी, तब भगवान राम को सहज ही स्मरण हुआ कि मुझे लोग कमलनयन नवकंच लोचन कहते हैं, तो क्यों न संकल्प पूर्ति हेतु एक नेत्र अर्पित कर दिया जाए और प्रभु राम जैसे ही तूणीर से एक बाण निकालकर अपना नेत्र निकालने के लिए तैयार हुए, तब देवी ने प्रकट हुई , हाथ पकड़कर कहा- राम मैं प्रसन्न हूँ और विजयश्री का आशीर्वाद दिया।

वहीं रावण के चंडी पाठ में यज्ञ कर रहे ब्राह्मणों की सेवा में ब्राह्मण बालक का रूप धर कर हनुमानजी सेवा में जुट गए। निःस्वार्थ सेवा देखकर ब्राह्मणों ने हनुमानजी से वर माँगने को कहा। इस पर हनुमान ने विनम्रतापूर्वक कहा- प्रभु, आप प्रसन्न हैं तो जिस मंत्र से यज्ञ कर रहे हैं, उसका एक अक्षर मेरे कहने से बदल दीजिए।

ब्राह्मण इस रहस्य को समझ नहीं सके और तथास्तु कह दिया। मंत्र में जयादेवी भूर्तिहरिणी में "ह" के स्थान पर "क" उच्चारित करें, यही मेरी इच्छा है।ख्2, भूर्तिहरिणी यानी कि प्राणियों की पीड़ा हरने वाली और "करिणी" का अर्थ हो गया प्राणियों को पीड़ित करने वाली, जिससे देवी रुष्ट हो गई और रावण का सर्वनाश करवा दिया। हनुमानजी महाराज ने श्लोक में "ह"की जगह "क" करवाकर रावण के यज्ञ

की दिशा ही बदल दी।

इस पर्व से जुड़ी एक अन्य कथा अनुसार देवी दुर्गा ने एक भैंस रूपी असुर अर्थात महिषासुर का वध किया था। पौराणिक कथाओं के अनुसार महिषासुर के एकाग्र ध्यान से बाध्य होकर देवताओं ने उसे अजय होने का वरदान दे दिया। उसे वरदान देने के बाद देवताओं को चिंता हुई कि वह अब अपनी शक्ति का गलत प्रयोग करेगा,और प्रत्याशित प्रतिफल स्वरूप महिषासुर ने नरक का विस्तार स्वर्ग के द्वार तक कर दिया और उसके इस कृत्य को देख देवता विस्मय की स्थिति में आ गए। महिषासुर ने सूर्य, इन्द्र, अग्नि, वायु, चन्द्रमा, यम, वरुण और अन्य देवताओं के सभी अधिकार छीन लिए थे और स्वयं स्वर्गलोक का मालिक बन बैठा। देवताओं को महिषासुर के प्रकोप से पृथ्वी पर विचरण करना पड़ रहा थे। तब महिषासुर के इस दुस्साहस से क्रोधित होकर देवताओं ने देवी दुर्गा की रचना की। ऐसा माना जाता है कि देवी दुर्गा के निर्माण में सारे देवताओं का एक समान बल लगाया गया था। महिषासुर का नाश करने के लिए सभी देवताओं ने अपने अपने अस्त्र देवी दुर्गा को दिए थे और इन देवताओं के सम्मिलित प्रयास से देवी दुर्गा और बलवान हो गई थी। इन नौ दिन देवी-महिषासुर संग्राम हुआ और अन्ततः महिषासुर-वध कर महिषासुर मर्दिनी कहलायीं।

संपादक मंडल द्वारा संग्रहित
साहित्य सरोज

गोलू

नवरात्रि में तमिलनाडु में सजाए जाते हैं भगवान की प्रतिमाएं । इसे गोलु कहते हैं।अमावस के दिन इन्हें सजाते हैं और विजयदशमी के रात तक इसकी पूजा कर इन्हें लिटा दिया और अगले दिन अंदर रख दिया जाता है। माना जाता है कि देवी ने युद्ध से अनेक असुरों का वध कर उन पर जीत पाई तो चूंकि यह दसवें दिन हुआ यह दिन विजयदशमी कहलाता है।

नवरात्रि के पहले तीन दिन दुर्गा माता की,अगले तीन दिन लक्ष्मी देवी और अंतिम तीन दिन सरस्वती की पूजा की जाती है। नौ दिनों के लिए नव धान्य से रोज एक धान्य यानि चने को उबालकर निवेदन किया जाता है।शाम को सुहागिन स्त्रियों और कन्याएं आमंत्रित की जाती हैं। उनसे देवी का स्तुतिगान करवाया जाता है और उन्हें सुंडल नामक चने के नैवेद्य के साथ तांबूल भी दिया जाता है जिसमें पान, सुपारी,केला,नारियल, हल्दी, कुमकुम,फूल , शीशा, चूड़ियां और कहीं कहीं वस्त्र भी दिए जाते हैं।

इस प्रकार नवरात्रि तमिलनाडु में बड़ी खुशी से मनाया जाता है। सरस्वती पूजा के दिन को आयुध पूजा के रूप मनाते हैं जब हर घर और दफ्तर में सभी औजारों को पूजा में रख देवी की पूजा धूमधाम से मनाते हैं। विशेष फैक्ट्रियों में इस पूजा का भव्य आयोजन होता है।

जमुना कृष्णराज
चेन्नई, तमिलनाडु

असली पूजन

अरे !सुनो - सुनो जी ।कल से नवरात्रि प्रारंभ हो रही है ।मेरे उपवास होंगे दिनभर पूजन -पाठ ध्यान ,आरती आदि में मेरे पास समय ही नहीं होगा ।निशा ने कहा! रोहन ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। अरे सुनो- ना रोहन ! मैं तुमसे कह रही हूं। रोहन ने कहा- क्या? तुम्हें जो करना है करो। सच में निशा बड़ी खुशी से झूम उठी। मानो उसे खजाना मिल गया हो ।तभी रोहन ने पूछा - माँ, कहां है ? माँ ,का नाम लेते ही निशा के तेवर चढ़ गए । वहीं हैं जहां रहती है। पलंग पर पड़ी है। दिन-रात नाक में दम कर के रखा है । कभी पानी ,कभी दूध,कभी कुछ और बस मैंने एम टेक इसलिए ही किया कि नौकर बनकर घर में काम करती रहूँ।

रोहन नाराज हुआ । कैसी हो तुम? वह माँ "है" "माँ", जिसने हमें जन्म दिया और तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिए । निशा पैर पटकते हुए दूसरे कमरे में चली गई ।जब देखो तब रोहन मुझे ही डांटता रहता है । आज तो मैं इसका निर्णय करके रहूंगी रोहन क्रोध से निशा को देखता रहा । बोला- रहने दो, मैं कर लूंगा "मां" की सेवा।

नवरात्रि आरंभ हुई। आज निशा का व्रत था। खाना बनाने का तो सवाल ही नहीं उठता था। वह पूजन पाठ में व्यस्त थी , तभी माँ ने आवाज दी निशा ....मुझे पानी दे दो । मां की आवाज को सुनकर के निशा नाराज होने लगी ।क्या है माँ! क्यों चिल्ला रही हो? मैं पूजन कर रही हूँ। दिन भर परेशान करना बस । यह सुनकर रोहन को बहुत क्रोध आया । वह तेजी से निशा के पूजन कक्ष में आया और बोलने लगा - कैसी हो तुम? तुम जीती जागती "माँ" को छोड़कर , इस फोटो की पूजन को अपनी पूजन का नाम दे रही हो। ऐसी पूजन से कोई देवी-देवता प्रसन्न नहीं होते। तुम एक माँ को तकलीफ देकर दूसरी मां को सुनकर निशा स्तब्ध रह गई। वह कभी देवी माँ की फोटो और कभी रोहन को देखती रही।। रोहन की बातों ने उसे झकझोर के रख दिया। उसे अपनी गलती का अहसास हो गया था। वह तुरंत दौडकर माँ के कमरे में गई और माँ से माफी माँगने लगी ।मुझे क्षमा कर दो माँ,रोहन सही कह रहा है। मैं अपनी देवी समान सासू माँ की सेवा छोडकर भला कैसे देवी माँ आशीर्वाद पा सकती हूँ। । मुझे क्षमा करना माँ, । रोहन - मैं , आगे से कभी तुम्हें शिकायत का मौका नही दूँगी ।रोहन बोला - निशा ,माता -पिता की सेवा करना ही "असली पूजन" है। निशा ने सिर हिलाया और दोनों माँ के चरणों में बैठ गए।

रंजना शर्मा "सुमन"
इंदौर विचार साहित्य मंच,इंदौर
मोबाइल न. ८७७०२२६८८६

नवरात्रि का आधुनिक पक्ष

नवरात्रि आते ही मन उल्लास से भर उठता है।तरह तरह के पकवानों से सजे भोजन थाल व्रतधारियों को दिखाई देने लगते हैं।तो चलिए आज नवरात्रों का वैज्ञानिक महत्व

भारतीय जनमानस अपनी जड़ों से जुड़ा है। अपने संस्कार,संस्कृति, परंपराएं, पारिवारिक पूजा अर्चना के नियम पीढ़ी दर पीढ़ी उसी तरह सहजता से अपनाता है जैसे कि जीवन के लिए हवा पानी भोजन और मानसिक शक्ति व उर्जा के लिए पूजा अर्चना को सात्विकता से निभाता है।

भारत में सब धर्मो के अनुयायी अपनी आस्था ,विश्वास और रीतिनुसार त्योहारों और पर्वो को मनाते हैं। आदिकाल से चले आये सभी धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठानों का वैज्ञानिक और मानवीय पहलु है । हर छोटी से छोटी क्रिया भी विश्व शांति और मानवता के उत्थान के लिए अग्रसर रहती है।

भारत में नारी को पूज्यनीय माना गया है ।मातृशक्ति के पर्व के रूप में साल में चार बार नवरात्रि मनाई जाती है। जिन में दो गुप्त नवरात्रि सहित शारदीय नवरात्रि और चैतीय नवरात्रि जिसे चौत्र नवरात्रि भी कहते हैं।ये चारों नवरात्रि रितु चक्र पर आधारित है और सभी रितुओं के संधिकाल में मनाई जाती है।गुप्त नवरात्रि तंत्र सिद्धि के लिए विशेष माने जाते हैं ।

आध्यात्मिक रूप को जाने तो यह प्रकृति और पुरूष के संयोग का काल है। प्रकृति मातृशक्ति है इसलिए इस दौरान देवी की पूजा होती है।

नवरात्रि के अन्य पहलुओं से पहले माँ के नौ रूपों को नमन करते हुए प्रत्येक की विशेषता जान लेते हैं।

1प्रथम शैलपुत्री-सम्पूर्ण जड़ पदार्थ का पहला स्वरूप है ।पत्थर, मिट्टी, जल वायु अग्नि आकाश सब शैल पुत्री का रूप है ।इनका पूजन यानि जड़ पदार्थ में भी ईश्वर को अनुभव करना है।

2.ब्रह्म चारिणी - इसका अर्थ है जड़ में ज्ञान का बीज, चेतना का संचार ही इस रूप की महिमा है।जड़ और चेतन के संयोग से अंकुरण ही सत्य है।

3.चंद्रघंटा- घंटा ध्वनि से तरंगित संसार । जीव में वाणी प्रकट होती है। जिस की अंतिम परिणीती बैखरी “वाणी ” है।

4. कुष्मांडा- स्त्री और पुरूष की गर्भधारण, गर्भाधान शक्ति है।जो भगवती का ही शक्ति अंश है और प्रत्येक जीव में दृष्टिगोचर होता है ।

5.स्कन्दमाता - पुत्रवती माता पिता का स्वरूप है।तात्पर्य यह है कि हर पुत्रवान माता पिता स्कन्द माता के रूप हैं ।

6. कात्यायनी- कन्या के रूप में माता पिता को प्रसन्नता प्रदान करती है। कन्या के माता पिता पूज्यनीय हैं।

7.कालरात्रि - इस रूप में यह दर्शाया गया है कि जड़ हो या चेतन अंतध्मृत्य अवश्यंभावी है। ऐसा माना जाता है कि यह सात स्वरूप तो पूजा से प्रत्यक्ष सुलभ होते हैं पर आठवां और नौवा सुलभ नहीं है।

8.महागौरी- यह स्वरूप महागौरी

गौर वर्ण का है।

9.सिद्धिदात्री-यह ज्ञान और बोध का प्रतीक है।जिसे जन्म जन्मांतर की साधना से पाया जाता है। यह पाकर सादक परम सिद्ध हो जाता है।

"प्रथम शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्म चारिणी
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकः
पंचम स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमः
नवम् सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीतिर्ताः।
उक्तान्येति नामानि ब्रह्मणैव महात्मनाः।

हमारे मनीषियों ने साल में दो बार नवरात्रों का विधान बनाया है। विक्रम संवत के पहले दिन अर्थात चौत्र मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नौ दिन अर्थात नवमी तक और इसी प्रकार. ठीक छः मास बाद अश्विन मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से महानवमी यानि विजयादशमी के एक दिन पूर्व तक ।

सिद्धि ओर साधना की दृष्टि से शारदीय नवरात्रों को अधिक महत्वपूर्ण माना गया है।

इन दिनों मनुष्य अपनी आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति संचय करने के लिए व्रत,संयम, नियम,यज्ञ, भजन ,पूजन,योग साधना आदि करता है। कुछ साधक तो पूरी रात पद्मासन या सिद्धासन में बैठकर आंतरिक त्राटक या बीज मंत्रों का जाप करते हैं। नवरात्रों में 51 शक्ति पीठों पर भक्तों का सैलाब होता है।

आजकल अधिकांश उपासक शक्ति पूजा दिन में ही कर लेते हैं जबकि मनीषियों ने रात्रि के महत्व को सूक्ष्मता के साथ वैज्ञानिक परिपेक्ष्य में सझा है और समझाया है । यह सर्वमान्य वैज्ञानिक तथ्य है कि रात्रि में प्रकृति के बहुत सारे अवरोध खत्म हो जाते हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने हजारों लाखों वर्ष पूर्व ही प्रकृति के रहस्यों को जान चुके थे। दिन के कोलाहल के अलावा ,दिन में सूर्य किरणें आवाज की तरंगों और रेड़ियो तरंगों को आगे बढ़ने से रोकती हैं।इस का वैज्ञानिक सिद्धांत यह है कि सूर्य किरणें जिस प्रकार रेडियो तरंग को रोकती हैं ठीक उसी प्रकार मंत्र जाप की विचार तरंगों में दिन के समय रूकावट आती है । रात्रि का महत्व दिन की अपेक्षा ज्यादा है। मंदिरों में शंख और घंटे की आवाज के कंपन से दूर दूर तक वातावरण किटाणु रहित हो जाता है।

नवरात्र यानि नौ रातों का समूह, इस रूपक द्वारा हमारे शरीर को नौ मुख्य द्वारों वाला कहा गया है। इस के भीतर ही निवास करती है जीवन शक्ति दुर्गा देवी है।इन मुख्य इंद्रियों में अनुशासन, स्वच्छता, तारतम्य स्थापित करने के प्रतीक रूप में ,शरीर तंत्र के नौ द्वारों को शुद्ध करने का पर्व.है नवरात्र , नौ दिन नौ दुर्गाओं के लिए हैं।

शरीर को सुचारू रखने के लिए विरेचन, सफाई हम रोज करते हैं पर अंग प्रत्यंगों की पूरी तरह भीतरी सफाई करने के लिए हर 6माह के अंतर में सात्विक आहार,व्रत, शद्धु बुद्धि, धर्म कर्म, सद्चरित्र और मंत्रों द्वारा मन मंदिर में देवी को स्थापित करने का पर्व नवरात्र महोत्सव ।

ज्योतिष व.आकाशीय विज्ञान के अनुसार चौत्र नवरात्रि के दौरान सूर्य का राशि.परिवर्तन होता है। सूर्य 12 राशियों में भ्रमण पूरा करते हैं। अगले चक्र में पहली राशि मेष है। सूर्य और मंगल की राशि मेष है।दोनों अग्नि तत्व के हैं । इसी संयोग से गर्मी आरंभ होती है। चौत्र नवरात्रि से नववर्ष के पंचांग की गणना शुरू होती है। इसी दिन से साल के राजा, मंत्री, सेनापति, कृषि के स्वामी ग्रह.का निर्धारण होता है ।अन्न, धन -धान्य ,व्यापार, सुख शांति का आंकलन किया जाता है। नवरात्रि में नवग्रह पूजन का भी यही कारण है।

धर्म ,आधात्मय, ज्योतिष ही नहीं नवरात्रि ऋतु परिवर्तन के दौरान आती हैं । रोग जिन्हें आसुरी ताकत कहते हैं । इन्हें खत्म करने के लिए हवन पूजन में जड़ी बूटियों और वनस्पतियों का प्रयोग किया जाता है। तह स्वास्थ्य के लिए भी जरूरी है। चारों नवरात्र ऋतुकाल के संधिकाल में होती हैं। मौसम में बदलाव ,शरीरिक और मानसिक बल में कमी आती है । व्रत से शरीर को मौसम अनुरूप तैयार किया जाता है।

नवरात्र के प्रथम दिन आदि शक्ति प्रकट हुई। उनके कहने पर ब्रह्मा जी ने सृष्टि का निर्माण शुरू किया ।नवरात्र के तीसरे दिन मत्स्य अवतार लेकर पृथ्वी की स्थापना की थी और विष्णु का सातवां अवतार भगवान राम का है जो चौत्र नवरात्र में हुआ था।

वर्तमान में युवा पीढ़ी और बच्चों को अगर धार्मिक व्रतों का औचित्य बताएं तो वे जरुर स्वयं इन्हें अपनायेंगे। हमारे उपनिषद, चारों वेद, पुराण ,रामायण, महाभारत ,भागवत गीता कपोल कल्पित नहीं हैं । आवश्यकता है उन के भीतर छिपे ज्ञान -विज्ञान. को जानने की।

इस बार माँ दुर्गा का आव्हान विश्व शांति और पारिस्थितिकीय उत्थान के लिए नवरूप में किया जाना चाहिए।

डा.नीना छिब्बर
सेवानिवृत्त अँग्रेजी व्याख्याता
जोधपुर
मोबाईल..९४६१०२९३१९

माँ शारदे को नमन

बांधना है मुश्किल तुझको
किसी शब्दों की सीमा में
चौन्धियाँ जा रही हैं अँखियाँ
ऐसी फैली है ज्योति नभ में

कैसा लावण्य कैसा रूप
फीकी पड़ी सूरज की धूप
कैसा है ये भव्य आकार
धरती इठलाए सह तेरा भार

तुझको कैसे मैं पुकारूँ
अम्बे दुर्गा या भवानी
तुझको मैं क्या सुनाऊँ
तू जाने जग की कहानी

तू ही सृष्टि तू ही रचियता
तू ब्रह्मांड तू ही कर्त्ता धर्ता
तुझसे क्या मांगू मैं दान
है समर्पित तुझ पे तन मन
और प्राण।

स्वर्ण ज्योति पौण्डिचेरी

व्रत रखने वाले मां के भक्त बड़े उत्साह के साथ अपने व्रतों का आनंद उठायेंगे। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि व्रत में लहसुन प्याज निषेध होता है।अधिकतर लोग अनाज का त्याग कर फलाहारी व्रत रखते हैं।सभी प्रकार के फलों के साथ, सूखे मेवे,कुट्टू,सवां के चावल, सिंघाड़े का आटा, साबुदाना,सीताफल,मूली,आलू,हरी मिर्च, धनिया,दूध से बने पदार्थ तथा दही, आदि शामिल रहते है।

मिष्ठान प्रेमी, साबुदाने की खीर, पनीर की खीर,पेठे की खीर, मखाने की खीर,लौकी की बर्फी,कद्दू का हलवा,कुट्टू के आटे या सिंघाड़े के आटे का हलवा, ड्राई फ्रूट्स के लड्डू तथा नारियल के लड्डू,फ्रूट क्रीम,श्रीखंड आदि का हर दिन आनंद उठा सकते हैं। ऐसे ही कुछ आसान रेसिपी मैं शेयर करने जा रही हूँ।

ड्राई फ्रूट्स के लड्डू

मखाने-:	200 ग्राम
काजू टुकड़ा-:	50 ग्राम
बादाम-:	50 ग्राम
सूखा नारियल-:	आधा नारियल या
सूखा धनिया-:	100 ग्राम
पिसी चीनी -:	200 ग्राम

किशमिश, इलायची पाउडर, खजूर या छुआरे

नोट-यदि आप नारियल वाले लड्डू खाना चाहते हैं तो धनिया उपयोग में न लें।

विधि -:मखाने एक मिनट के लिए माइक्रोवेव के बर्तन में डाल कर माइक्रोवेव कर लीजिए या कड़ाही में भून कर क्रिस्प कर लीजिए। यदि आप धनिया प्रयोग में लेना चाहते हैं तो धनिया भी सुनहरा होने तक भून लीजिए।अब मिक्सी में मखानो का बारीक पाउडर बना लें।उस पाउडर को किसी बड़े बाउल या बर्तन में निकाल लें। मिक्सी के ग्राइंडर में काजू टुकड़ा,बादाम और नारियल डालकर महीन पीस लें। पिसे ड्राई फ्रूट्स को मखाने के पाउडर के बर्तन में उड़ेल लें। किशमिश और छुआरे ख्रगुठली निकाल कर"बारीक कर लें। आधा चम्मच इलायची पाउडर। पिसी चीनी यदि नहीं है तो पीस लें। एक कड़ाही उस साईज की लें जिसमें एक साथ सारी सामग्री समा सके।

कड़ाही को गैस पर रख कर गरम करें।200 ग्राम मलाई या क्रीम डाल दें। मलाई गरम होते ही गैस बंद कर दें। अब उसमें सबसे पहले इलायची पाउडर डालें फिर ड्राई फ्रूट्स मिक्स मखाने डाल दें। पुनः गैस जलाएं एक मिनट धीमी आंच में कलछी से मिश्रण को मिक्स करें।गैस बंद कर कड़ाही नीचे उतार लें।अंत में पिसी चीनी डालकर अच्छे से मिलाएं। अब सामग्री को ठंडा होने के लिए छोड़ दें। जब मिश्रण ठंडा हो जाए तो उसके लड्डू बनाकर तैयार कर लें। व्रत में सुबह दूध के साथ खाएं।स्वादिष्ट पौष्टिकता से भरपूर लड्डू सेहत के लिए लाभदायक। नोट -लड्डू लंबे समय तक न टिकाएं।

व्रत में सुबह के मीठे नाश्ते के पश्चात् संध्या के भोजन के लिए हरी चटनी के साथ कुट्टू के आटे के नमकीन चीले तैयार करें।

चीला बनाने की विधि

कुट्टू का आटा- 2कटोरी
पानी -4कटोरी
सेंधा नमक स्वादानुसार
देसी घी
हरी मिर्च
हरा धनिया
भरने के लिए पनीर 250ग्राम

कुट्टू के आटे का चीला बनाने के लिए सबसे पहले आप कुट्टू के आटे को एक बर्तन में छान लें। इसके बाद आटे में थोड़ा-थोड़ा कर पानी मिलाएं और ध्यान रखें कि मिश्रण में गांठें न पड़ें। अब इस मिश्रण को 15 मिनट के लिए अलग रख दें। अब इसमें , सेंधा नमक डालकर अच्छी तरह से मिक्स करें। मध्यम आंच में एक न,न स्टिक पैन में तेल गर्म करें. फिर एक बड़े चम्मच की मदद से चीले के घोल को पैन में डालें और इसे गोलाई में धीरे-धीरे फैलाएं। आंच धीमी कर चीले को पकने दें. दोनों तरफ से सुनहरा होने तक सेकें।

अब तैयार कुट्टू के चीले को प्लेट पर निकालें। पनीर कद्दूकस कर उसमें हरा धनिया और हरी मिर्च बारीक काट कर मिला लें।सेंधा नमक और लाल मिर्च स्वादानुसार मिला लें। तैयार चीले पर कसा पनीर चीले के सेंटर में फैलाकर,चीले को दोनों ओर से दबा दें। हरे धनिये और मूंगफली की चटनी के साथ गर्मा-गर्म सर्व करें।

चटनी-ःहरा धनिया,एक नींबू, मूंगफली, सेंधा नमक,आधा कटोरी दही,हरी मिर्च मिलाकर स्वादिष्ट चटनी तैयार करें।

सवां के चावल की खिचड़ी-ः 1कप सवां के चावल, 4 कप पानी, आधा कप बारीक कटा पनीर, 1आलू या दो आलू, 50 ग्राम काजू टुकड़ा, अदरक बारीक कसा हुआ, 2 टेबल स्पून देसी घी, टेबल स्पून लाल मिर्च पाउडर स्वादानुसार सेंधा नमक।

विधि-ः सबसे पहले चावल साफ करके भिगो लें। कुकर गैस पर चढ़ाकर गरम करें।अब देसी घी डालें।बारीक कसा अदरक डालकर कलछी से चलाएं।काजू के टुकड़े तथा छोटे छोटे कटे आलू के टुकड़े डाल दें। सेंधा नमक और लाल मिर्च मिलाकर दो मिनट तक पकाएं।अब पनीर के टुकड़े डाल दें । फिर पानी मिलाकर उसमें उबाल आने दें। पानी उबलते ही उसमें भीगे चावल मिलाकर कर ढक्कन कस दें। एक सीटी आने पर गैस बंद कर लें। भाप खत्म होने पर चावलों का ढक्कन उतार दें।कलछी चलाकर मिक्स कर लें। और फिर सर्व करें।

मीना अरोड़ा
हल्द्वानी

नवरात्रि का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक पक्ष

सृष्टि रचयिता ने मानव की रचना की ,उसके अंतः करण में शक्तियों .का भंडार तो भर दिया। सभी शक्तियां सुप्त अवस्था में ही रहती हैं जब तक कि उनको जप - तप साधन पूजन हवन अथवा अन्य किसी उपास्य विधि से जागृत न किया जाए। इन सूक्ष्म शक्तियों को जागृत करने का एक उपाय है नवरात्रा स्थापना नवरात्र का अर्थ है "नवीनतम यज्ञ नव का अर्थ नवीनता से है और रात्रि का अर्थ है यज्ञ एक ऋतु के आगमन पर जो देवी शक्ति को हो जाती है उस शक्ति को उन्हें प्राप्त करने के लिए जो जप यज्ञ पूजा पाठ किया जाता है उसे नवरात्र कहते हैं"।

हमारे यहां वर्ष में चार नवरात्र आते हैं चौत्र शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक वासंती नवरात्र आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक शारदीय नवरात्रा आषाढ़ शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक गुप्त नवरात्रा माघ शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक गुप्त नवरात्रा परंतु इन चारों नवरात्रों में प्रथम दो ही अधिक मान्य है। दो ऋतुओं की संधि बेला पर मनाया जाने वाला यह पर्व 9 दिनों तक चलता है। इस पर्व की पावन बेला में सूक्ष्म जगत अनेक परिवर्तनों से गुजरता है।

अतः 9 दिन तक लगातार साधना उपासना व्रत अनुष्ठान आदि का क्रम चलता रहता है।जिससे दिव्य अनुदानों की प्राप्ति होती है ।यद्यपि देश काल और परिस्थिति वश नवरात्रि उपासना में भिन्नताएं हैं परंतु लक्ष्य एक ही है कि उपासक और उपास्य में निकटता हो ।जिससे आध्यात्मिक तरंगों का आदान-प्रदान हो और साधन अर्थात मां दुर्गा के नौ देवी रूप साधक का श्रद्धा विश्वास अनुशासन संयम और नियम को पूर्णरूपेण पालन करना बता सकें।

मां दुर्गा के नौ रूप क्रमशः शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा ,कूष्मांडा ,स्कंदमाता ,कात्यायनी, कालरात्रि ,महागौरी और सिद्धिदात्री हैं जो साधक को अपनी अपनी शक्ति और रूप का प्रभाव दिखाते हुए शरीर के सात चक्र यथा मूलाधार चक्र ,मणिपुर चक्र ,अनाहत चक्र की सुप्तावस्था को जागृत करके संसार के समस्त आवरणों और मल विक्षेप सेमुक्त कराकर विशुद्ध चक्र में प्रवेश कराता है पहले दिन की साधना से प्रारंभ करते 9 दिन की साधना तक आने पर साधक मूलाधार चक्र से बीज रूप में अपनी आत्मशक्ति को समस्त चक्रों का भेदन करते हुए आज्ञा चक्र में स्थित करता है परिणाम स्वरूप साधक जितेंद्र और नौ शक्तियों से परिपूर्ण होकर स्वयं भी शक्ति स्वरुप हो जाता है।

वैदिक ऋषियों के अनुसार काया रूपी अयोध्या में विद्यमान 9द्वार अर्थात नौ इंद्रियां हैं जिनके सदुपयोग से प्रकाश और दुरुपयोग से अंधकार छा जाता है। परंतु मानव का उद्देश्य तो प्रकाश फैलाना है ।यदि ऐसा नहीं हो पाता तो साधक नवरात्रि अनुष्ठान के समय प्रत्येक तिथि की प्रत्येक रात्रि को एक-एक इंद्रिय पर विजय प्राप्त करते हुए रखें यही है नवरात्रि साधना का मर्म ऐसा करने से साधक की चेतना परिष्कृत और परिचित होकर आशा में बढ़ती है दुर्गा कहते हैं दोषों, दुर्गुणों, कषाय कल्मषों को नष्ट करने वाली शक्ति को। मनुष्यकी पापमयी वृत्तियां ही महिषासुर हैं नवरात्रि में मानसिक संकल्प द्वारा उपवास ब्रह्मचर्य, कठोर बिछौने पर शयन, किसी से सेवा न लेना और अपनी दिनचर्या को नियमित और अनुशासित रहकर अंकुश लगाया जा सकता है।

यह सृष्टि सीधी रेखा में नहीं चलती है ।सृष्टि के इस नियमित चक्रके चलने सेमनुष्य का मन कही दूर चला जाता है ।पर नवरात्रि पर्वमन को वापस अपने स्त्रोत की ओर लाता है।इस पर्व में उपवास, साधना और उपासना तीन स्थानों पर राहत मिलती है। उपवास शरीर विषाक्त पदार्थो से मुक्त हो जाता है। उनके मौन के द्वारा वचनों मे शुद्धता आती है और ध्यान के द्वारा आत्म साक्षात्कार का अवसर मिलता है अंतर

यात्रा प्रारंभ हो जाती है इस अंतर यात्रा में महिषासुर अर्थात जड़ता शुंभ-निशुंभ अर्थात गर्व तथा मधु कैटभअर्थात राग-द्वेष जैसे दैत्यों पर विजयप्राप्त की जाती है। इसके अलावा साधना उपासना हमारे नकारात्मक सोच की मनो ग्रंथियों को जो कि"रक्तबीजासुर का प्रतीक है" समूल नाश करती हैं और चंड-मुंड रूपी बेमतलब के तर्क-वितर्क नष्ट होकर जीवनीशक्ति के स्तर को बढ़ावा मिलता है।

नवरात्रि के पहले 3 दिन तमोगुण के दूसरे तीन दिन रजोगुण के और अंतिम 3 दिन सतोगुण के माने गये हैं । इस पर्व में हमारी चेतना से गुजरती हुई सतोगुण के आखिरी 3 दिनों में खिल उठती है। यह तो निर्विवाद सत्य है कि जब जीवन में सतोगुण का सत्व बड़ जाता है तो विजय निश्चित है।

अतः इसे जश्न के रूप में मनाया जाता है। श्री श्री रविशंकर जी के अनुसार "यह पर्व द्वैत पर अद्वैत की विजय है"। उनका कहना है इस स्थूल संसार के भीतर ही सूक्ष्मसंसार समाया हुआ है लेकिन उसके बीच भासित अलगाव की भावना ही द्वंद का कारण है। एक ज्ञानी के लिए पूरी सृष्टि जीवंत है देवी मां ही शुद्ध चेतना के रूप में सब नामों और रूपों में व्याप्त है। हरनाम और हर रूप में एक ही देवत्व को जानना ही नवरात्रि का उत्सव है।

यद्यपि प्रकृति सौंदर्य का प्रतीक है परंतु मां काली के रूप में प्रकृति का एक भयानक रूप भी है जो अनाचार के समय उभर कर सामने आता है परंतु ज्ञान भक्ति और निष्काम कर्म के द्वारा इस अद्वैत रूप पर विजय पाई जा सकती है । आध्यात्मिक महत्व के साथ नवरात्र का वैज्ञानिक महत्व भी है नवरात्रि का पर्व चाहे वह चौत्र नवरात्रि हो अथवा शारदीय नवरात्रि दोनों ही दो ऋतुओं की संधि वेला पर संपन्न होते है।

एक ओर जहां चौत्र नवरात्रि शरद ऋतु की समाप्ति और गर्मी की ऋतु के आगमन पर और शारदीय नवरात्रि वर्षा ऋतु के समापन और शीत ऋतु के प्रारंभिक काल में होते हैं। ;ऋतु संधिकी बेला में प्राकृतिक परिवर्तन देखने को मिलते हैं इस परिवर्तन में जनजीवन मौसमी बीमारियों से ग्रसित होता है अतः इन 9 दिनों में व्रत अनुष्ठान की आध्यात्मिक चिकित्सा से रोगों का क्षय होता है और व्यक्ति पूरा वर्ष स्वस्थ रहता है।

देवी भागवत महापुराण में बताया गया है कि रक्तबीज का बढ़ते जाना किसी संक्रामक व्याधि का ही प्रतीकात्मक स्वरूप है जिस का नाश करना शक्ति की उपासना शक्ति की साधना से ही संभव है इसके अलावा 9 दिनों का उपवास, एक आसन अथवा फलाहार ऋतु परिवर्तन के दौरान बिगड़े वात ,कफ और पित्त जनक व्याधियों से बचाकर शारीरिक स्वास्थ्य का संतुलन बनाए रखता है शरीर स्वस्थ तो मन स्वस्थ तन और मन का स्वास्थ्य सर्वत्र प्रसन्नता ही तो लाएगा प्रसन्नता का अर्थ है सुखी जीवन जिसका श्रेय जाता है मां दुर्गा को ऐसा माना जाता है कि महाभारत काल में श्रीकृष्ण ने भी अर्जुन को नवरात्रा में प्रथम भगवती शक्ति की उपासना करने का आदेश दिया था ।

शारदीय नवरात्र में दुर्गा पूजा महापूजा कहलाती है इस जगत का सृजन पालन और संहार करने वाली आध्या शक्ति एक ही है उसके लोक कल्याणकारी रूप को ही दुर्गा कहते हैं आइए अबकी बार शारदीय नवरात्रों पर मां दुर्गा की आराधना करें।

-

लीला पलानी
जोधपुर

फलाहारी डोसा और चटनी-

सामग्री— समा के चावल एक कप, आधा कप सिंघाड़े का आटा, दो चम्मच घी, एक चम्मच सेंधा नमक, एक चौथाई चम्मच काली मिर्च, थोड़ा सा हरा धनिया।

चटनी सामग्री— एक कप हरा नारियल कद्दूकस किया हुआ, एक चम्मच तिल, आधा कप दही, आधा चम्मच काली मिर्च।

बनाने की विधि-सबसे पहले समा के चावल को 2 घंटे धोकर भिगोकर रखना है फिर उसका अतिरिक्त पानी निकाल दे और चावलों को मिक्सी में पीस लें पीसने के दौरान दो-तीन चम्मच पानी मिलाएं फिर इस इन पिसे हुए चावल को सिंघाड़े के आटे मैं मिलाकर घोल तैयार करें। पानी एक दो चम्मच जरूरत के अनुसार डालें इस घोल मैं नमक हरा धनिया काली मिर्च डालकर अच्छी तरह मिला लें 10-15 मिनट के लिए उसे ढक कर रख दे।

अब नन स्टिक तवे पर थोड़ा सा घी लगाएं और कलछी या चम्मच से एक कलछी घोल तवे पर गोल-गोल घुमाते हुए फैलाएं आधे मिनट के बाद इसमें चारों तरफ से हल्का किनारों पर लगाकर उसे पलट ले गैस की आंच को मध्यम ही रखें आज को तेज रखने से भूल फैलता नहीं है। फिर से पलट ले और प्लेट में निकाल ले ऐसे ही सारे डोसे बनालें।

चटनी बनाने की विधि-

कद्दूकस किया हुआ हरा नारियल को मिक्सर जार में डालकर उसमें दही मिला ले सेंधा नमक काली मिर्च भी डालें इस सामग्री को पीसकर निकाले फिर उसमें तड़का लगाएं तड़का लगाने के लिए एक चम्मच में घी डालकर गर्म करें गर्म होने पर उसमें तेल का तड़का लगाएं और चटनी में डाल दें चटनी तैयार है।गरमा गरम फलाहारी डोसे और चटनी तैयार है।

नीता चतुर्वेदी,विदिशा मध्य प्रदेश

माता रानी

शेर पे सवार होके,
आई माता रानी आज,
भक्तों के मन में तो ,
छा रही उमंग है ।

घर- घर धूप-दीप,
बाजे शंखनाद अब,
सब जन कर रहे,
पूजा संग-संग हैं ।

सिर पे मुकुट सोहे,
कान में कुण्डल है,
हाथ में कमल देख
जियरा तो दंग है ।

कूचर शोभे पग में,
है परिधान तन में,
माता की चदरिया के,
लाल-लाल रंग हैं ।

डा.प्रतिभा कुमारी
"पराशर"
हाजीपुर वैशाली बिहार
9798414628

छोले वाली माँ

मध्यप्रदेश के विदिशा शहर से कौन नहीं परिचित होगा। विदिशा जिला मुख्यालय से महज 35 किलोमीटर दूर रायसेन और वहां से लगभग 17 किलोमीटर दूर सागर रोड पर ग्राम खंडेरा स्थित सुप्रसिद् प्राचीन स्थल छोले वाली माता के नाम से प्रसिद्ध है।

इस मंदिर को उत्तर भारत के कोबोल आकार में आकृति दी गई है। मान्यताओं के अनुसार यहां आने वाले सभी भक्तों की मुरादे पूरी होती हैं। यह विशाल देवी का मंदिर भक्तों की आस्था का प्रमुख केन्द्र है। मंदिर में छोले वाली मैया पिंडी रूप में भक्तों को मन मोह लेता है।

छोले वाली मैया के मंदिर का इतिहास वर्षो पुराना है। एक मान्यता के अनुसार खंडेरा में एक बार प्लेग नामक बीमारी पूरे गांव में फैल गई थी इस बीमारी से ग्राम वासियों ने बचाव के लिए छोले के वृक्ष के नीचे स्थित माता के स्थान पर विशेष पूजन का आयोजन किया और यहां के लोगों को इस बीमारी से बहुत कुछ राहत मिली। तभी से आसपास के गांव के भक्तों ने वहां माता को पांच पिंडी के रूप में स्थापित किया। छोले के वृक्ष के नीचे माता का स्थान होने से इनका नाम छोले वाली मैया के रूप में जाना जाने लगा।

खंडेरा गांव में स्थित इस मंदिर में पहले सिर्फ वृक्ष के नीचे माता का स्थान था । कालान्तर में धीरे-धीरे मंदिर में विशाल रूप ले लिया लेकिन माता आज भी अपने पिंडी के मूल रूप में स्थापित है। आज इस मंदिर की दूर दूर तक ख्याति फैली हुई है।

शारदीय नवरात्र और चौत्र नवरात्रि में यहां बहुत बड़ा मेला लगता है। नवरात्रि में विशाल देवी जागरण का आयोजन भी किया जाता है इस समय यहां की लोकप्रियता देखते ही बनती है आसपास के गांव और कई शहरों से भक्तगण अपनी मनोकामनाएं पूरी होने पर पिंड भर कर आते हैं कई हजार मीटर चुनरी यात्रा निकाली जाती है उस समय लोगों की आस्था देखते ही बनती है। चारों तरफ हरियाली के बीच में मंदिर बड़ा ही खूबसूरत लगता है। आप मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल और आसपास भ्रमण के उद्देश्य से आये तो यहाँ एक बार यहां अवश्य आकर माता रानी का आशीर्वाद ले।

नीता चतुर्वेदी, विदिशा मध्य प्रदेश

कोमल हैं कमजोर नहीं

पता नहीं कैसे हैं हम भारतीय हैं हम शक्ति के लिए पूजन देवियों का करते हैं और जब कोई साक्षात देवी सशक्त होती है तो हम उसे नकारते है, उपहास उड़ाते हैं, टांग खींचते है और नीच हरकतों पर उतार आते है। ताजा उदाहरण निर्मला सीतारमन का है जिनके रक्षा मंत्री बनने पर लोगो ने घटिया जोक्स बनाने शुरू कर दिया। जबकी इतिहास गवाह है की जब जब महिलाओं को खुद को सिद्ध करने का अवसर मिले है उन्होने खुद को पुरुषों के समकक्ष या बेहतर ही साबित किया है ।

पहला उदाहरण है मर्द के दर्द का "9 माह कष्ट सहकर सृजन करने की ताकत भगवान ने केवल महिलाओं को ही क्यों दी,हम भी क्या इनसे कम है? ऐसे ही दो पुरुषों ने यह साबित करने के लिए कि लेबर पेन का दर्द पुरुष भी सह सकते हैं, स्टिमुलेटर्स की मदद से लेबर पेन का अनुभव करने की कोशिश की । इस दौरान उन्हें बच्चे के जन्म के समय पेट में होने वाले संकुचन का एक्सपीरियंस हुआ हालांकि यह प्रक्रिया महिलाएं 1 घंटे से 24 घंटे तक सह सकती है। लेकिन मर्द को दर्द नहीं होता कहने वाले पुरुष कुछ ही मिनटों में तड़पने लगे । एक पुरुष ने कहा कि उसे लगा जैसे कोई उसके पेट पर आरी चला रहा हो। दूसरे पुरुष ने कहा कि अब मैं नहीं सह सकता, मैं सबकुछ फेंकने वाला हूं। यह हालत तब थी, जब उन्होंने वास्तविक लेबर पेन सहा भी नहीं था। उन्हें सिर्फ 40 प्रतिशत दर्द का ही अहसास कराया गया था। वास्तविक लेबर पेन की अवस्था तो कई घंटो तक रह सकती है, जिसे कमजोर मानी जाने वाली महिलाएं खुशी खुशी सहती हैं। पुरुषों के लेबर पेन के मौके पर उन्हें इमोशनल सहारा देने के लिए उनकी पत्नियां भी मौजूद थीं। लेकिन अपने-अपने पति की हालत देखकर वे हंसने लगीं। बाद में एक पुरुष ने कहा कि अब मुझे पता चला कि मैंने अपनी मां को बरसों पहले कैसा कष्ट दिया था. सचमुच, मेरी मां सुपर हीरो हैं।

दूसरा उदाहरण है मध्यप्रदेश के खंडवा जिले का एक गाँव लंगोटी। यहाँ पानी की बहुत गंभीर समस्या से गाँव की औरतों को रोज दो चार होना पड़ता था । महिलाओं ने पंचायत से लेकर प्रशासन तक गुहार लगाई। घर के पुरुषों को आगे गिड़गिड़ाई , लेकिन बदले में मिली केवल झिड़कियाँ और आश्वासन। उन्हे लगा खुद ही कुछ करना होगा फिर जागृत हुई नारी शक्ति और लगभग 20-25 महिलाएं सब्बल ,गेंती और फावड़े लेकर निकल पड़ी धरती माँ की कोख से पानी निकालने । उनकी कड़ी मेहनत और अथक प्रयास रंग लाये और चट्टानों का सीना चीर कर मीठे पानी की धार बह निकली।

महिला! उसके बाद आस-पास मौजूद सभी लोग मुझे अजीब सी नजरों से होंगे साथ ही महिलाएं उनके कई कामो में हाथ बंटा कर हल्का भी कर देगी । ।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि देवियों को पूजने ,उनसे शक्ति की प्रार्थना करने वाला देश साक्षात शक्ति को नकारता है, अनदेखा करता है, शोषण करता है, हक से वंचित करता है,उन्हे पीछे धकेलता है , जबकि महिला और पुरुष दोनों हो समाज के दो पहिये हैं, एक को कमजोर करके संतुलित विकास हो ही नही सकता। जब तक देश की आधी आबादी सशक्त नही होगी हम विकास की कल्पना भी नही कर सकते। समय की मांग है और समाज की जरूरत भी कि महिलाओं को भी पुरुषों के सामान अधिकार मिले, उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलें।

सुषमा दुबे
इंदौर

नारी जीवन

========

शम्मा-सा जलता है पल-पल,और पिघलता नारी जीवन।
देकर घर भर को उजियारा,आँखें मलता नारी जीवन ।।

कर्म निभाती है वो तत्पर,हर मुश्किल से लड़ जाती
गहन निराशा का मौसम हो,तो भी आगे बढ़ जाती
पत्नी,माँ के रूप में सेवा,तो क्यों खलता नारी जीवन।
देकर घर भर को उजियारा,आँखें मलता नारी जीवन।।

संस्कार सब उससे चलते,धर्म भी सभी उससे खिलते
तीज-पर्व नारी से पोषित,नीति-मूल्य सब उसमें मिलते
आशा और निराशा लेकर,नित ही पलता नारी जीवन।
।देकर घर भर को उजियारा,आँखें मलता नारी जीवन।।

कहने को तो दो घर उसके,पर सब कुछ है बेमानी
भटक-भटककर,तड़प-तड़पकर कटती देखो जिन्दगानी
त्याग औश करुणा,धैर्य-नम्रता,कंटक चलता नारी जीवन।
देकर घर भर को उजियारा,आँखें मलता नारी जीवन।।

कर्मठता,पर शोषण होता,छल,मातम के मेले हैं
दुख,तकलीफें,व्यथा-वेदना,हर पल रोज झमेले हैं
स्वयं छोड़कर,सारे गृह को हरदम फलता नारी जीवन ।।
।देकर घर भर को उजियारा,आँखें मलता नारी जीवन।।

ताकत बेहद,पर नेहिल है,है संतोषम् परम् सुखम्
नहीं निराशा औश मायूसी,हाल वही अब भी कायम
नतमस्तक हो अनाचार सह, खुद को छलता नारी जीवन।
।देकर घर भर को उजियारा,आँखें मलता नारी जीवन।।

प्रो.डा. शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय
मंडला,म.प्र
मो.9425484382

बिटिया नव दुर्गा का रूप तू....

सबको हँसाती हो जब तुम जब
खिलखिलाती हो तुम..,
रुनझुन चलती हो तो,
हर ओर खुशियाँ बाँटती हो तुम...
आँगन की रौनक हो तुम....
अम्मा-बाबा के रातों की नींद, दिन
का चौन हो तुम...
भाई के चेहरे की खुशी और
शरारत हो तुम...
अम्मा की सहेली उसके आँचल
का फूल हो तुम...
लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा का रूप
हो तुम कृ
घर की जन्नत और मन्नत हो तुम...
सबका नाम आसमान पर भी लिखने
वाली कलम हो तुम कृ
तपस्या सफल हुई, ऐसा प्रतीत
होता तब -
जब सफलता की सीढ़ी
,चढती हो तुम
, बताती है शालीनता तुम्हारी ,
माता पिता के त्याग का परिचायक
हो तुम स
चार चाँद तब लगता है जब अपना
संस्कार लेकर
एक घर से दूसरे घर मे नींव
रखती हो तुम
प्रफुल्लित करती हो, जब नई पौध का
वंश बीज का बोती हो तुम..
बड़ा सौभाग्य है उस घर का जिस घर
में जन्म लेती हो तुम...
एवं जिस घर को सजाती और संवारती
हो तुम..!!

इंदु उपाध्याय

मखाने की खीर

सामाग्री-: 1/2 प्याला मखाना, 4 प्याला दूध, 1/4 प्याला किशमिश,1 प्याला चीनी, 1 बड़ा चम्मच छोटी इलायची दाना,दो बड़े चम्मच बादाम "भीगे हुए और बारीक कटे हुए",थोड़ा सा केसर।

विधी -: काजू और बादाम को बारीक काट लें। किशमिश को धोकर अलग रखें। हरी इलायची का बाहरी छिलका निकालें और दानों को दरदरा कूट लें। मखानों को महीन-महीन काट लें या फिर मिक्सी में दरदरा पीस लें। एक भारी तली के बर्तन में घी गरम करिए और उसमें मखानों को एक मिनट के लिए भूनें। इसमें दूध डालें और मखानों के साथ अच्छी तरह मिलाएँ।

पहले उबाल के बाद आँच को धीमा कर दें और मखानों को दूध में पूरी तरह से गलकर दूध में मिल जाने तक पकाएँ। इस प्रक्रिया में लगभग ४ मिनट लगते हैं। 5-7 मिनट के अंतराल पर दूध को चलाते रहना चाहिये ताकि वह तली में जल न जाए। कटे हुए मेवे, किशमिश और शक्कर को दूध में अच्छी तरह मिलाकर एक मिनट और पकाएँ। आँच को बंद कर दें। कुटी हुई इलायची मिलाएँ। इस खीर को ठंडा परोसें। यह खीर विशेष रूप से व्रत के दिनों में बनाई जाती है। इच्छानुसार खीर में गुलाब जल या केसर डाला जा सकता है।

डा०अलका पाडेंय (अगनिशिखा मंच)
कोपरखैराने नवि मुम्बई

फलाहारी कोफ्ते

सामग्री-: सिंघाड़ा आटा 1 कटोरी, राजगिरा आटा-1 कटोरी, खीरा ककड़ी-किसी हुई-1/2 कटोरी, जीरा -1/2 चम्मच, हरी मिर्च - दो नग, मूंगफली दाने हल्के सिके, दरदरा पिसे हुये- दो चम्मच, सेंधा नमक- स्वादानुसार, कालीमिर्च- दरदरी पिसी1/2चम्मच, घी/तेल- आवश्यकतानुसार, पानी- आवश्यकतानुसार, दहीं - स्वादानुसार।

विधी-: दही को छोड़कर उपरोक्तानुसार समस्त सामग्री मिक्स कर कम तरल "सेमी लिक्वीड" घोल तैयार कर लें।तेल/घी गरम करें। मनचाहा शेप देकर बाल्स बना कर धीमी आंच पर तलें। स्वादिष्ट फलाहारी कोफ्ते तैयार है।

हरी चटनी की सामग्री- नींबू का रस- दो चम्मच, हरी मिर्च- चार नग, हरा धनिया कटा हुआ- एक कटोरी, मूंगफली दाने "सिके" का चूरा दो चमम्च सेंधा नमक- स्वादानुसार, शक्कर स्वादानुसा"यदि डालना चाहें"।

विधि-: सभी सामग्री को मिक्स कर पीस लें "स्वादानुसार" थोड़ा सा पानी डालकर पतला भी कर सकते हैं। हरी चटनी तैयार है। दहीं को थोड़ा पानी पिसा भुना जीरा नमक डालकर फेंट लें। उसमें कोफ्ते डालें। परोसते समय स्वादानुसार हरी चटनी डालें।

कुमुद दुबे
इन्दौर(म.प्र.)

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता

शिल्पा अरोड़ा
विदिशा

शक्ति साधना का पर्व नवरात्रि 17 अक्टूबर से 24 अक्टूबर 20 20 आधा शक्ति जगदंबा के रूप में आपके घर इस बार स्थापित होगा। भगवती जगदंबा के कमल का आसन मुंडमाला एवं मुद्राएं धारण कर कर मां जगदंबा आपके घर में प्रवेश करेंगी।

शक्ति को लेकर आपके मन में चाहे जो भी भ्रम हो एक तथ्य सत्य है कि शक्ति ब्राह्य अनुभव करने की वस्तु नहीं है। बल्कि शक्ति आपके अंदर स्थित है । यह अलग बात है की आपको ज्ञान नहीं है और आजीवन भिक्षा पात्र लिए आप दर-दर भटकते हैं यह सोचते हैं कि कोई और आपको ऊर्जा प्रदान करें और आपकी मनोकामनाएं पूर्ण करें।

जगदंबा के नर मुंडो की माला को धारण करने का अर्थ यकीनन संघार है,तो कुछ लोग इन्हें पूर्व जन्मों का प्रतीक मानते हैं कहीं पर मुंड को अहंकार माना गया है तो कहीं विचार मुंडमाला की व्याख्यान विविध हो सकती हैं परंतु संघार की दिशा में इशारा करती हैं।
महिषासुर की सेना का वध शक्ति द्वारा हमारे मन में दुष्ट व्रतियों का अंत है । ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि महिषासुर की सेना के सिपाही बहुत ढीठ है। वे शीघ्रता से हार नहीं मानते हैं और देवी से भयंकर युद्ध करते हैं।

हमारे अंदर भी युद्ध निरंतर चलता रहता है दुष्ट व्रतियों का और सब व्रतियों के मध्य मगर हमारी चेतना अगर शुद्ध हो तो मां जगदंबा की कृपा हम पर सदैव बनी रहती है। इस नवरात्रि में आधा शक्ति जगदंबा हमारे मन में छाई उदासी और अंधकार का अंत कर कर दे और यह उदासी और निराशा का भाव ही जीवन में अवसाद के रूप में आता है और उस पर विजय प्राप्ति के लिए हमको नवरात्रि में आधा शक्ति जगदंबा पूजन अवश्य संपन्न करना चाहिए। जगदंबा वह है जब हमको परिवर्तित कर दे जो हमने असाधारण ऊर्जा का संचार करें और हम बाधाओं से मुक्त हो जाएं इस नवरात्रि मां से यही कामना है।

मां दुर्गा की महिमा

मां दुर्गा की महिमा अपार,
गुण गाता है यह संसार,
सुख समृध्दि की दाता हो,
मां चरणों में बारंबार प्रणाम।
घर-घर में घटस्थापना देख
माता हर्षित हो जाती है,
नौ दिन में नव रूप धरती,
मां की आराधना होती है ।
पूजा पंडाल मंदिर सज गए ,
हो रहा भजन कीर्तन वंदना,
श्रद्धा सुमन अर्पित चरणों में,
कर रहे मां की पूजा-अर्चना ।
सच्ची श्रद्धा से जो भक्ति करते ,
मां प्रसन्न हो जाती है ,
धन धान्य से पूर्ण कर देती ,
भक्तों की झोली भर जाती है।
मां की आराधना करो,
बेटियों का मत अपमान करो ,
नारी भी मेरा स्वरूप है,
हरदम उनका सम्मान हो,
जिस घर में नारी का सम्मान होगा,
वह घर स्वर्ग बन जाएगा ,
किस्मत बदल जाएगी तुम्हारी ,
अपने अंदर के राक्षस का ,
स्वयं संहार करो ।

श्रीमती शोभा रानी तिवारी,

माता मनसा देवी मंदिर पंचकूला

ट्राई सिटी चंडीगढ़ से 10 किलोमीटर तथा पंचकूला से 4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित सर्व मनोकामना पूर्ण करने आस्था का केंद्र माता मनसा देवी का मंदिर देश के प्राचीनतम मंदिरों में से एक है।

कहा जाता है कि माता सती ने जब स्वयं को अग्नि में होम कर दिया था तो भगवान शिव यज्ञ स्थान पर पहुँच कर सती माता का शरीर लेकर तांडव करते हुए यत्र - यत्र भटकने लगे। ऐसे में माता सती के खंडित हुए अंग जहाँ-जहाँ भी गिरे ,वहाँ-वहाँ शक्तिपिंडों की स्थापना हुई ।

यह मंदिर जहाँ स्थित है, वहाँ पर सती माता के मस्तक का आगे का भाग गिरा था । इसी वजह से इसे मनसा देवी के नाम से जाना जाने लगा। यह मंदिर पहले सती माता के मंदिर के नाम से जाना जाता था । इस मंदिर का निर्माण सन् 1815 में मनीमाजरा के राजा गोपाल सिंह ने अपनी मनोकामना के पूर्ण हो जाने के बाद करवाया । कहा जाता है कि राजा गोपाल सिंह के महल से मंदिर तक जाने का लगभग तीन किलोमीटर लंबा एक गुफा मार्ग भी था । इसी मार्ग से वह अपनी रानी के साथ माता के दर्शन हेतु जाता था।

मंदिर के गर्भ गृह में माता मनसा देवी की मूर्ति है जिसके आगे तीन पिंडियां रखी हुई हैं जो कि महालक्ष्मी , मनसा देवी और सरस्वती के नाम से जानी जाती हैं।मंदिर के गर्भ गृह के पास ही एक विशालकाय पेड़ श्रालुओं के मध्य आकर्षण का केंद्र है । इसके चारों ओर घूमकर तथा इस पर अपनी मनोकामना का धागा बांध कर अपनी इच्छा को माता के चरणों में समर्पित करते हैं और उसके पूर्ण होने के पश्चात आकर उसे खोलते हैं। मंदिर की दीवारों को भीति चित्र के पैनलों से सजाया गया है। इसकी मेहराब और छत पर फूलों की चित्रकारी की गई है।

सुंदर हरे - भरे उद्यान के मध्य ये मंदिर एक आलौकिक आंनद की अनुभूति करवाता है। लगभग सौ एकड़ से भी अधिक फैलाव वाले मंदिर में सफाई व्यवस्था आने वाले श्राद्धलुओं पर एक अमिट छाप छोड़ती है। मुख्य मंदिर परिसर से कुछ दूरी पर पटियाला मंदिर का निर्माण किया गया है जिसमें दुर्गा माता के नव रूपों की तस्वीरें तथा मूर्तियाँ हैं। मंदिर परिसर में दो लंगर तथा भंडार गृह हैं और एक सुंदर यज्ञशाला का भी निर्माण किया गया है।

यहाँ प्रतिवर्ष चौत्र और अशिवन माह के नवरात्रों में एक भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। इसमें देश विदेश से लाखों की संख्या में श्रद्धालु अपने मनोकामना पूर्ति के लिए आते हैं। इस दौरान मंदिर के ट्रस्ट द्वारा यात्रियों के आवास तथा दर्शनों की समुचित व्यवस्था की जाती है।

तम्बू के आवास , दरी कम्बल आदि की व्यवस्था ,अस्थाई डिस्पेंसरी , पुलिस प्रबंधन, लंगर की व्यवस्था सुचारू रूप से की जाती है ताकि बाहर से आने वालों को असुविधा का सामना न करना पड़े। मेले में दूर दराज से लोग आकर अपने -अपने क्षेत्र की लोकप्रिय वस्तुओं के साथ दुकानें सजाते हैं। इस भव्य मेले की तैयारियाँ लगभग एक माह पूर्व से ही प्रारम्भ हो जाती हैं।

वर्ष भर यहाँ पर दूर दराज से भक्त आते रहते हैं। माता मनसा देवी मंदिर अपने आप में एक आलौकिक एवम् दिव्य अनुभूति प्रदान करने वाला है ।

किरण बाला, चंडीगढ़

माँ कामाख्या मंदिर - गहमर

एशिया के सबसे बड़े गाँव गहमर में स्थित आदि शक्ति माँ कामाख्या का मंदिर शक्ति पीठ में अलग महत्व रखता है। इस पवित्र भूमि में कभी जमदग्नि, विश्वामित्र, गाधि-तनय, इत्यादि ऋषी - मुनियों का सतसंग समागम हुआ करता था। विश्वामित्र ने यहाँ एक महायज्ञ किया था। मर्यादा पुरूषोत्म राम ने यहाँ से आगे बढ़ कर बक्सर में ताड़का नामक राक्षस का वध किया था ।

मंदिर की स्थापना के बारे में कहा जाता है कि पूर्व काल में फतेहपुर सिकरी में सिकरवार राजकुल पितामह खाबड़ जी महाराज ने कामगिरि पर्वत पर जा कर माँ कामाख्या देवी की घोर तपस्या की, उनकी तपस्या से प्रसन्ना माँ ने कालान्तर तक सिकरवार वंश की रक्षा करने का वरदान दिया। सन् 1530 में बाबर के साथ हुए मालवा युद्व में पराजित होने के बाद हताश एवं परेशान महाराज धामदेव को माँ ने काशी क्षेत्र में जाने एवं वही अपना निवास बनाने का आदेश दिया। माँ का आदेश मान कर राजा धाम देव फतेहपुर सिकरी से अपने पुरोहित गंगेश्वर उपाध्याय को साथ लेकर काशी क्षेत्र के लिए चल दिये।

उस समय यह पूरा क्षेत्र काशी प्रान्त कहा जाता था। आज भी यह क्षेत्र लहुरीक काशी के नाम से ही जाना जाता है। कहा जाता है कि काशी के इस क्षेत्र में चेरू राजा शशांक का शासन था, वह काफी क्रूर था उससे यहाँ की प्रजा काफी दुखी थी।धामदेव ने अपने साथ आये लड़ाको के साथ उसके साथ युद्व किया जिसमें शशांक पराजित हुआ।उसकी पराजय के बाद धामदेव राव ने यहाँ अपना राज्य स्थापित कर लिया। गंगा के पावन तलहटी में बसे इस क्षेत्र मे एक छोटा सा स्थान ऐसा था जो गंगा के बाढ़ के समय सुरक्षित माना जाता था,जिससे सकराडीह कहा जाता था। सकरडीह का मतलब ही होता है छोटा स्थान या तंग स्थान। धाम देव ने उस स्थान को हर तरफ से सुरक्षित मानते हुए वही माँ कामाख्या देवी की एक प्रतिमा नीम के पेड़ के पेड़ के पास मंदिर बना कर स्थापित कर दी।मंदिर में स्थापित प्रतिमा के योनी मंडल में माँ भगवती का साक्षात् निवास है। इस योनी मंडल के स्थापना के कारण यहा माँ कामाख्या का मंदिर कहा जाता है। यह मंदिर पहले कहाँ स्थित था, इस संबंध में लोगो में मतभेद है। कुछ का कहना है कि वर्तमान समय में बने डाक बंगले के पास यह मंदिर स्थापित था।कुछ लोगों का कहना है कि मंदिर शुरू से वही था जहाँ आज है।

समय के साथ- साथ माँ कामाख्या का महत्व बढ़ता जा रहा था। दूर-दराज से भक्त माँ के भवन पहुँचने लगे थे, मगर नियति को कुछ और ही मंजूर था। कहा जाता है कि भारत में जब मुगल शासन काल शुरू हुआ और मुगलो द्वारा भारत में मंदिर को गिराने और उसकी जहग मजिस्द बनाने का काम शुरू हुआ, उसी में माँ कामाख्या के भवन को भी मुगल शासक औरंगजेब द्वारा तोड़वा दिय गया। कुछ का मानना है कि अंग्रेजो के शासन काल में इसे तोड़ा गया। वर्ष 1840 ई0 तक मंदिर में खंड़ित मूर्तियों की ही पूजा होती रही। इनमें प्रमुख रूप से काली, महाकाली, सरस्वती, यक्ष, यक्षिनी, भैरो व चेरो-खरवार की मूर्तियाँ थी।

सन् 1841 ई0 में अपनी गहमर के र्स्वणकार तेजमन ने मनोकामाना पूर्ण होने के बाद इस मंदिर के पुनःनिर्माण का बीड़ा उठाया। मंदिर का निर्माण प्राकृतिक यंत्र व्यवस्था के आधार पर काशी के महा पंडितो को बुला कर कराया गया। निमार्ण के बाद मंदिर में खंडित मूर्ति के स्थान पर नई मूर्ति की स्थापना की गयी। जब भारत में अंग्रेजी शासन के जुल्म बढ़ने लगे तो यहाँ के लोग आजादी की लड़ाई में शामिल हो गये और मंदिर के निर्माण का कार्य बहुत धीरे गति से होने लगा। वर्ष 1980 में गहमर के जनमेजय

सिंह ने अपनी मनोकामाना पूर्ण होने के बाद मंदिर परिसर के सुन्दरीकरण का कार्य शुरू कराया। मंदिर का जीणोद्वार प्रारम्भ हुआ माँ के अगल- बगल सरस्वती व लक्ष्मी की मूर्ति की तथा मुख्य द्वारा पर गणेशजी की काली मूर्ति लगायी गयी।

उत्तर प्रदेश के गाजीपुर-बारा मार्ग मुख्य मार्ग पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी द्वार के शक्ल का मुख्य स्वागत द्वार बनाया गया। मंदिर के समीप लगभग एक बीघे में तालाब बने का निर्माण श्रमदान से हुआ। मंदिर परिसर में ही विवाह भवन, सांस्कृतिक मंच, अतिथि भवन एवं पुलिस चौकी का निर्माण कराया गया। मंदिर के मुख्य द्वार पर एक गुफा का निर्माण करा कर उस शेर की प्रतिमा एवं धातु का बना हआ 20 फीट ऊचाँ त्रिशुल बनाया स्थापित किया गया । गर्भ गृह के नीचे भैरो बाबा का मंदिर स्थापित किया गया। मंदिर परिसर में स्व-चलित झाँकियाँ बनाकर लगाई गई।

सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं अन्य आयोजनो के लिये मंदिर के युनियन बैंक आफ इन्ड़िया द्वारा एक मंच बनवाया गया। प्रसाद एवं जलपान के सुनियोजित बाजार का निर्माण भी मंदिर के पास ही कराया गया। वन विभाग द्वारा डाक बंगले की स्थापना की गई।

पूजा-अर्चना

माँ कामाख्या का मंदिर भारत के शक्ति-पीठों में अपना एक अलग स्थान रखता है, इस लिए यहाँ पूजा भी पूरे वैदिक रीति रिवाज के साथ होती है। मंदिर के पुजारी सूर्योदय से पूर्व ही गंगा स्नान कर शुद्व गंगा जल मंदिर तक लाते है जिससे माँ को स्नान कराया जाता है और उनका श्रृगांर किया जाता है। भक्तो का समूह मंदिर के चारो तरफ जमा होकर माँ की आरती गाता है। मुख्य पुजारी मंदिर का कपाट बंद कर विशेष पूजा करते है। पूजा उपरान्त ही मंदिर भक्तो के लिए खोला जाता है। भक्त आरती के बाद आरती लेकर प्रसाद ग्रहण करते है। दूर दराज से आये भक्त नारियल, चुनरी से पूजा माँ की पूजा करते है। भक्त अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए गर्भगृह के बाहर नीम के पेड़ में मनौती का धागा बाँधते है जो मनोकामना पूर्ण हो जाने के बाद गाजे- बाजे के साथ आकर वह धागा खोलते है।

वैसे तो माँ के धाम पर पूरे वर्ष मेले का माहौल रहता है परन्तु चैतीय रामनवमी में विशाल मेला लगता है। मेले में उत्तर प्रदेश के अलावा बिहार, झारखंड से भक्त पूजा-अर्चना के लिए आते है। इस मेले का मुख्य आकषर्ण अष्टमी की रात में होने वाले निशा पूजन एंव नवमी तिथि को होने वाला घुड़दौड होता है। सावन माह में भी मेले का आयोजन होता है।बच्चो के लिए झूला इत्यादि लगाये जाते है। पूरे क्षेत्र की सुहागिन औरते आकर माँ को सिन्दूर चढ़ाती है और वह सिन्दूर अपने सिन्होरे में रख कर पूरे वर्ष अपनी माँग सजाती हैं।

माँ कामाख्या की सैनिको पर बहुत कृपा रही है, यही कारण है कि गहमर क्षेत्र के सैनिक काफी कम संख्या में हताहत होते है। कहा जाता है कि युद्व के समय माँ का प्रवास मंदिर में नहीं होता है, वह युद्व क्षेत्र में विचरण करते हुए अपने बेटो की रक्षा करती है। गहमर क्षेत्र का हर सैनिक अपने तैनाती स्थल से घर आने एंव तैनाती स्थल पर जाने के पूर्व दर्शन करना नहीं भूलता है।बच्चों पर माँ की कृपा सदा बनी रहे इसलिए गहमर क्षेत्र में पैदा होने वाले प्रत्येक बच्चे का 3,5,7,9 वर्ष की आयु में मुंड़न संस्कार माँ के धाम पर होता है। यहाँ होने वाले मुडंन संस्कार की अपनी एक अलग ही पहचान है जो आपको विस्तार से आगे देखने को मिलेगी।

प्रमुख आयोजन एंव मेले

चैतीय नवरात्रि - माँ कामाख्या धाम मंदिर में चैतीय नवरात्रि में मेले का आयोजन होता है।नौ दिन माँ की भव्य आरती,श्रृगांर होता है। अष्टमी की रात को निशा पूजन का कार्यक्रम होता है। नवमी तिथि को मंदिर परिसर के विशाल हवन-कुण्ड में शाम तक हवन का कार्यक्रम होता है। इसी दिन परिसर में मेला लगता है पूरे परिसर में तिल रखने मात्र की जगर नहीं होती है। समाजसेवी संस्थानों द्वारा पूरे परिसर में जगह-जगह

सेवाकेन्द्र, प्याउ, मुफ्त शरबत के साथ-साथ भंडारा एंव लगंर भी आयोजित किये जाते है।

घुड़दौड़ -:

नवमी तिथि को माँ के मंदिर के पास कबीना मंत्री ओमप्रकाश सिंह के द्वारा घुडदौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर उ०प्र० और बिहार के प्रसिद्ध घुड़सवार हिस्सा लेते है। इस आयोजन को देखन दूर दूर से लोग आते है।

पूर्णवासी का मेला-

माँ के धाम में चैतीय पूर्णामासी को भी भव्य मेले का आयोजन होता है। आज के मेले की खासियत यह होती है कि आज का मेला औरतो के लिये लगता है। कहा जाता है कि चैतीय नवमी के दिन और माता पूजन एवं धार्मिक क्रिया-कलापो में व्यस्त रहती है। वह माँ के दरबार में नहीं जा पाती है। औरते पूर्णमासी को माँ के दर्शन करती है और अपनी आवश्यकता की वस्तुये मेले से खरीदती है। आज भी यह मेला विशु) रूप से ग्रामीण परिवेश के अनुसार लगता है। मेले में घरेलु उपयोग की चीजें ही अधिक बिकती है।

श्रावणी मेला-

माँ कामाख्या धाम में पूरे सावन मेले का आयोजन रहता है। जगह जगह झाकियाँ झूले इत्यादि लगाये जाते है। इस माह में सुहागिन औरते माँ को सिन्दूर आर्पित करती है । चढ़ाये हुए सिन्दूर को अपने सिन्होरा"विवाह के लकड़ी के बने जिस पात्र में रख कर सिन्दूरदान होता है " में रखती है और माँ से प्रार्थन करती है कि वह सदा सुहागिन रहें।

चौलकर्म संस्कार

माँ के दरबार में होने वाले चौलकर्म कार्यक्रम की छटा देखने लायक होती है। जगह-जगह रंग-बिरंगे कपड़ो में उघम बचाते बच्चे, सोलह श्रृंगार से सजी नव-विवाहितायें,हर तरह घूमती नजर आती हैं। पाराम्परिक देवी गीत गाती औरते, बैन्ड बाजे के धुन पर तिरकते परिवार के सदस्य और कैंची-छूरे के डर से बिलखते मुड़न करते बच्चे । कही भोजन तो कहीं चाट-सामोशे खाते नवयुवक -नवयुकतियाँ। हर तरफ खुशियों का माहौल होता है। मंदिर परिसर में हर तरह मजमा लगा रहता है। सभी एक दूसरे की सेवा में लगे रहत है।गाड़ीयों का शोर, ट्रैक्टर पर सवार हो कर आती जाती ग्रामीण महिलाएं माँ के भक्ति गीतो से सबको मंत्रमुग्ध कर देती है।

वैवाहिक कार्यक्रम-

माँ के दरबार में अब धीरे-धीरे वैवाहिक कार्यक्रम का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। अमीरी-गरीबी की परिपाटी से हट कर लोग माँ के दरबार में पंजीकरण करा कर वैवाहिक कार्यक्रम सम्पन्न करते है। इसके लिये मंदिर प्रशासन ने पूरी व्यवस्था भी कर रखी है। मंदिर के पास ही आवश्यक सामान उपलब्ध है। भोजन तथा जलपान की व्यवस्था के लिए कई नीजी होटल भी परिसर में ही उपलब्ध है।

कन्यापूजन

जब से मंगत सेठ को पता चला कि वो पिता बनने वाले हैं, उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था। उन्होंने तो जश्न की तैयारी भी शुरू कर दी क्योंकि बहुत मन्नतों के बाद उनके कुलदीपक का जन्म होने वाला था। फिर भी उन्होंने डाक्टर से जाँच करा लेना उचित समझा। जाँच में डाक्टर ने बताया कि आपकी होने वाली संतान लड़की है।सारी खुशियाँ आने से पहले ही दगा दे गयीं। तुरंत फैसला ले लिया गया। उस बालिका को जागने से पहले ही सुला दिया गया। खैर, समय बीतने के साथ ही वह शुभ घड़ी भी आयी जिसका सेठ जी को इंतजार था। उनके घर कुलदीपक का जन्म हुआ। पंडित जी ने कुंडली बनाई और बच्चे के जीवन में आने वाली कठिनाइयों के निवारण हेतु नवरात्रि व्रत और उसके समाप्ति पर नौ कन्याओं के पूजन करने को कहा। कुलदीपक के भविष्य को उज्जवल बनाने हेतु सेठ जी ने नवरात्रि का व्रत रखा और आज सेठ जी ने नौ कन्याओं को भोजन कराया। उनके पैर धोकर चरणामृत अपने पूरे परिवार समेत कुलदीपक को पिलाया । उन्हें दान देकर विदा किया। कन्या पूजन संपन्न हुई और सेठ जी आज चिन्ता मुक्त हो गयें।।

अनूप कुमार शुक्ल गाजीपुर

मोर मेहरारू

चौका बरतन कुल कर सुतली
उठे में तनकी देर भईल
भोरे भोरे मेहरी आ के
लस्सी नीयन फेंट गईल स

फोन लगवली अधिकारी के
साहेब ई का अंधेर भईल
सबसे बड़की बेमारी त
हमरा घरही में फइल गईल स

बहुत भईल इ ल,कडाउन अब
साहेब जल्दी बुलवाई।
अइसन न हो ये साहेब हम
खटते खटते मरि जाई स

ओहर से हमरे साहेब के
सुनी का जवाब मिलल।
झाडू पोंछा करत बानी हो
खाये के ना कबाब मिलल

साहेब क इ बात साहिल के
दिल के अंदर बेंध गईल
कोरोना के फेर में देखी
मरदन के का हाल भईल सस

संतोष साहिल, गाजीपुर की कलम से

ढोंग बंद करो – लघु कथा

जय माता शेरे वाली , जय भवानी , जय अम्बे , जय दुर्गे भवानी ।पूरे नौ दिन कमला देवी सुबह से जयकारा लगा लगा कर पूरे घर को जगा देती है , बहुत श्रद्धा से भक्ति , हवन पूजन करती है ।कमला जी पूरे घर को हिदायत दे कर रखती है , कोई लहसुन ,प्याज नही खायेगा , साात्विक जीवन सब लोग पालन करते है नौ दिन , पर शगुन को यह सब नही पचता उसे कमला जी का यह सब ढोंग लगता ,पर बहू थी कुछ कह नही सकती बस दिल मसोस कर रहती है ।और देखती रहती थी ,रोज के आडम्बर आज अष्टमी थी सुबह से हलवा पूरी चने का प्रसाद बनाया गया था आसपास की कन्याओं को बुलाया गया उनके लिये तोहफे भी लाये गये कन्या आई उनको पाटे पर बैठा कर कमला देवी पैर पूजने लगी अभी एक कन्या का पैर पूजकर दुसरी का पूजने जा रही थी की शगुन चिल्ला पडी माँ जी बंद करे यह ढोंग कन्या पूजने का , घर में आने वाले बच्चे की जाँच करवाने की जिद्द की कही लड़की न आ जाये बेटा चाहिऐ और एक दिन कन्या पूजन का नाटक , क्यों ?

माँ जी मेरी कोख में बेटी हुई तो , क्यो, करवाऊ टेस्ट में नही कराऊँगी जो भी है बेटी या बेटा , मेरा बच्चा है , वह दुनियाँ में आयेगा सुन रही है आप माँ जी यही सही कन्या पूजन होगा आप का कमला देवी ने शकुन को गले लगा कहाँ सही कह रही हो बेटी।

मैं आज पूरी तरह सम्मान से इन कन्याओं का पूजन करुगी व माता रानी से आशीर्वाद में एक प्यारी सी परी मागूगी जो मेरी इस बगियां को गुलजार कर दे। चल देर हो रही है मैं पैर पूजती हूँ तुम सबको प्रसाद बाँटो – शकुन के आँसू मुसकराहट में बदल गये !!

डा0 अलका पाण्डेय .मुम्बई–

नवरात्रि-स्वर्ण ज्योति

नवरात्री में यहाँ तमिलनाडु और कर्नाटक में इस तरह की झांकी सजाने की रीत है। यह प्रथम दिन से प्रारम्भ होकर दसवे दिन समाप्त होती है। इन नौ दिनों मे रोज भोग बनता है साधारणतया भोग में चना और चने से मिलता जुलता ही कोई भोग बनता है। माना जाता है कि देवी को चना बहुत पसंद है और श्रेष्ठ है। और हर दिन सुमांगलियों को घर में आमंत्रित कर उन्हें सुहाग की वस्तुयें दी जाती हैं। जिनमें हल्दी कुंकुम चूड़ी बिंदी कंघी आईना पान सुपारी और फूल अवश्य होते हैं । किसी किसी दिन ब्लाउज का कपड़ा या फिर कोई बर्तन या डिब्बा या फिर साडी भी दिए जाते हैं यह सब अपनी इच्छा और शक्तिनुसार दे सकते हैं।

नौवे दिन आयुध और वाहन पूजा की जाती है कई स्थानों पर इसी दिन सरस्वती पूजा भी की जाती है। दसवें दिन विजयोत्सव मनाया जाता है।

चित्र में काले रंग की जो गुड़िया दिखाई दे रही है उन्हें राजा रानी कहा जाता है। और इनमें ही राम कथा ,दशावतार , अष्ट लक्ष्मी, कृष्ण जन्म कथा, आदि अनेक प्रकार से झांकी सजाई जाती है। अपनी कल्पना शक्ति और अर्थ शक्ति के अनुसार घर घर में या झांकी सजाई जाती है।

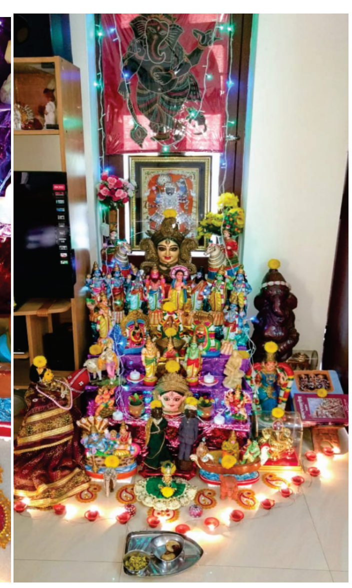

नवदुर्गा

। नव दुर्गा का पंडाल सजा था हर साल यहाँ बहुत श्रद्धा और भक्ति से लोग नवरात्री उत्सव मनाते है , रात को गरबा खेलते है।भक्तों की आपार भीड़ हमेशा रहती है आने जाने वालों का ताँता लगा रहता है , जय माता दी के जयकारा से पंडाल गूंजता रहता है । नव दिन ना ना प्रकार की प्रतियोगिताएँ और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूप रहती है ।आरती का समय राज ११ बजे का रहता है आज समय हो गया था आयोजक महोदया बोली चलो आरती की तैयारी करो आज एम पी साहब आ रहे है उनके हाथों माता की आरती करेगे जा सोनू कालू हलवाई से अच्छे वाले पेड़े ले आ कहना एम पी साहब आ रहे है , आरती करने १द्गकिलो पेडो दे दे उनकी तरफ से आज काप्रसाद , और चलो सब संस्था की टी शर्ट पहनकर चका चक तैयार होकर आ जाओ बडी तैयारियाँ शुरु हो गई आरती की , रांगेली सजाई गई थी तमाम तैयारी की गई।

मंच का अध्यक्ष बहुत प्रसन्न नजर आ रही थी सब बच्चे आ गये भक्त लोग आ गये आरती की पुरी तैयारी हो गई , बस सबकी नजरें बहार अब आये ”एम . पी . ”साहब , अब आये आरती का समय। निकल रहा था सब परेशान पर ”एम . पी ”साहब का पता नहीं भक्त गण नाराज हो गये , एक बुजुर्ग साहब आगे आ कर चिल्लाये क्या लगा रखा है , हमें आरती कर लेनी चाहिए माता को नाराज नहीं कर सकते हम ” एम पी साहब ” हमारे भगवान नहीं है , अब इंतजार नहीं करेगें !

हम माँ की आरती करते है शुरु करो , ”एम . पी . ”साहब का बहुत राह देख ली चलो जलाओ आरती , आपस में बहस शुरु हो गई तभी ”एम . पी ”साहब आ गये जय के नारे लगने लगे पटाके फूटे ”एम . पी ”साहब पंडाल में आये माता की मूर्ती के सामने पैर पड़े व दो हजार का नोट चढ़ा कर जाने लगे सब बोले साहब आरती कर जाईयें आप के लिये माता की आरती अभी तक नहीं की आप के लिये रुके रहे ”एम . पी . ”साहब बोले नहीं आप लोग कर ले मुझे और कहीं जाना है , कई पंडालों के चक्कर काटने है , पार्टी के कार्यकर्ता इंतजार कर रहे है ! मैं चलता हूँ जय माता दी।

तब एक महिला आगे आकर बोली साहब आप को आरती करना पड़ेगी हम कब से राह देख रहे हैं आप को बिना आरती के नहीं जाने देंगे , हमारी माता जी आरती आज आप के हाथ से होगी , आप बिना आरती केनहीं जा सकते।”एम . पी ”. साहब का पारा चढ़ गया तमतमा कर बोले ऐ बुढीयां चल हट ..कर ले आरती ”माँझा डोका फेरु नका ” मेरा दिमाक मत खराब कर पीछे हट तब तक मंच की अध्यक्ष आ गयी हाथ जोड़ कर बोली सा. सब लोग आपका रास्ता देख रहे है आप सबको प्रसाद देंगे आरती के बाद ,”ऐडा झाला है काय,पागल हो गये हो क्या ऋ मै आरती का प्रसाद बाँटूँगा कोई काम नहीं है मुझे , तुम लोगों ने सोच कैसे लिया ...सर आपने ही तो कहाँ था जब मैं आंमत्रित करने आयी थी ।

वह मैंने सबके सामने कह दिया होगा पर आज समय नहीं है फिर आरती करने किसी दिन आ जाऊँगा , खुश आप लोग ,,”एम . पी . ” साहब एहसान दिखते हुए बोले चल जाने दो हटो सब और ..यह रखो हजार रु . ये औरत को दे दो बक्षीश वह बाँट देगी प्रसाद मेरे तरफ से। सब लोग गुस्से से बड़ बड़ करने लगे इतने में वह औरत आगे आई और बोली ओ ”एम . पी.“ साहब मुझे तेरी बक्षीश नही चाहिऐ , ये ले मैं तूझे बक्षीश देती हूं ...और माताकी मूर्ती पर से हजार रुपये घुमा कर ”एम. पी ” को बोली रख माँ आशीर्वाद समझ कर माता तुम्हे माफ करे व सद् बुद्धी दे ” एम . पी. ”तो बन गया पर जनता की भावनाएँ नहीं समझ सका ...

तब तक काका ने आरती शुरु कर दी सब लोग ”एम. पी . को छोड़ आरती करने लगे सिर्फ

मंच की अध्यक्ष उन्हे छोड़ने कार तक गई ," एम. पी " साहब भड़कते हुए बोले बडें बदतमीज है तुम्हारे लोग समझा देना मुझे से पंगा न ले।

ड, अलका पाण्डेय -मुम्बई- महाराष्ट्र

हरसिध्दि

ममता की मूरत
करूणा का सागर
माँ जगजननी
आपका
शुभ आगमन हुआ
पुलकित तन मन हुआ
कैसे करू सत्कार आपका
कुछ समझ ना आये
आपकी सुंदर छबि
पर वारी जाऊ बारम्बार
नवरूपों में विराजी
हर घर द्वार माँ
आप पानिधान
हो क्षमावान
स्नेह सुधा से
हो परिपूर्ण
कैसे करू
सत्कार आपका
जीवन की ज्योति
हो आप
श्रध्दा का दीपक
भी आप
हर मर्म की दवा
हो आप
हर दर्द में प्रार्थना
भी आप

शब्दों में ना
हो पाये वर्णन
शब्दो से माँ
परे हो आप
हर सिध्दी की दाता
जीवन भाग्य
विधाता हो
हर पल साथ
खडी हो आप
फिर कैसी चिंता
कैसा डर
मेरा तुमको
सर्वस्व है अर्पण
तुम ही मे

जीवन प्राणस
डा० नंदिनी शर्मा "नित्या"

समाज के बदलाव

अनुभूतियों, विचार और चिंतन की मानव जीवन के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका है जो आदर्श बनकर उपस्थित परिस्थितियों में संघर्षरत होते हुए भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है , यही जीवन का यथार्थ है । मानव का चिंतन ही साहित्य की सर्जना करता है । साहित्य में जीवन के समस्त पहेलुओं की विवेचना होती है जिसमें एकांगी दृष्टिकोण का स्थान नहीं क्योंकि साहित्य में जीवन की व्यापकता की संस्थापना समाहित है ।

यह सम्बंध सूत्र परिस्थितियों पर निर्भर करता है और स्वाभाविक रूप से साहित्य पर परिस्थितियों और परिवेश का प्रभाव पड़ता ही है इसीलिए साहित्य में शाश्वत सि)ांतों के समन्वय के साथ युगानुकूल सामयिकता विद्यमान रहती है । पत्र-पत्रिकाओं ने सदैव से ही समाज के बदलाव और नवीन राहों के दिग्दर्शन, विकास और उद्‌भावना की तलाश का महती कार्य किया है जो सामान्य प्रक्रिया मात्र नहीं वरन्‌ एक कठिन साधना रही है और हमारी साहित्यिक पत्रिकाओं की परम्परा अत्यंत समृद्धशाली रही है ।

आज बढ़ती तकनीक ,पत्रिकाएं खरीद कर न पढ़ने की प्रवृत्ति और शब्दों के क्षरण होने के कारण पत्रिकाओं का दायित्व और अधिक बढ़ गया है । वर्तमान में लाभ अर्जित करने की प्रतिस्पर्धा जिसमें आभ्यांतरिक साधना के लिए अवकाश नहीं रहा । जहाँ साहित्य की समन्वयात्मक शक्ति और विचारों की सांस्कृतिक दृष्टि को परे रख तात्कालिक हितों को प्रश्रय देने का भय व्याप्त हो तो पत्रिकाओं का जन मानस से आत्मीय रिश्ता कैसे बने, गहन विमर्श और आत्म विश्लेषण का विषय है ।

जब किसी पत्रिका के साथ साहित्यिक शब्द जुड़ जाता है तो बात संस्कृति और संस्कार की आ जाती है । कारण कि साहित्य परिष्कार है । सोच- विचार, चिंतन-मनन,रहन सहन, आदतों आदि में मानवीय परिष्कार का नाम ही संस्कार है । यदि हमें जीवन मूल्यों की रक्षा करना और अपसंस्कृति के संकट से समाज को बचाना है तो ऐसे संक्रमणशील समय में साहित्य के अनुशीलन, विचार, आत्ममंथन और दूर दृष्टि का सम्यक संतुलन ही समस्याओं के निराकरण में प्रभावी भूमिका का निर्वाह कर सकता है क्योंकि मनुष्य की वृत्तियों और अनुभव के सत्य के आधार पर किया गया रचना कर्म सर्वकालिक और सांस्कृतिक चिंतन को आश्वस्ति प्रदान करने वाला होता है ।

आधुनिक परिवेश की भौतिकवादी संस्कृति ने वैचारिक आत्मरिक्तता को जन्म दिया है । विज्ञापनों का मायाजाल हमारी सांस्कृतिक अस्मिता और नैतिक मूल्यों का ह्रास कर बाह्य सौन्दर्य के लिए प्रेरित कर रहा है । जबकि सभ्यता और संस्कृति की प्रगति भौतिकता से नहीं आभ्यांतरिक विकास से होती है ।

अतः सांस्कृतिक अवमूल्यन की रक्षा के लिए साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रकाशन, संरक्षण और संबर्द्‌धन को प्रोत्साहित करना हमारा कर्तव्य बन जाता है।

कान्ति शुक्ला
प्रधान संपादक